

# स्तोत्र सूची

Folio

|                         |     |
|-------------------------|-----|
| १. नाम संगीति -         | (१) |
| २. स्तुतमापि -          | १२  |
| ३. देव मनुष्या -        | २१  |
| ४. पूर्व दिगं प्रति -   | २४  |
| ५. इन्द्रादिदेव -       | २५  |
| ६. श्री धर्म धातु -     | २७  |
| ७. सर्व भूत -           | २९  |
| ८. त्रैलोक्य नाथ -      | ३२  |
| ९. आदि उभय -            | ३३  |
| १०. विश्वविन्दु -       | ३४  |
| ११. अतासे कुसुम -       | ३७  |
| १२. गोपुच्छ पर्वत -     | ३८  |
| १३. मन्मथीकृत -         | ३८  |
| १४. स्तुत्वा प्रसाम्य - | ४१  |
| १५. बुद्धादिदेव -       | ४५  |

|                     |    |
|---------------------|----|
| १६. नजातो -         | ४६ |
| १७. सिद्धिमुनि -    | ४६ |
| १८. कामुनि पर्वत -  | ४८ |
| १९. उत्तिमन्मथी -   | ४९ |
| २०. द्वारिद्रपंके - | ४९ |
| २१. आराधितो -       | ५१ |
| २२. संखेंदु कुन्द - | ५२ |
| २३. उत्तिमन्मथी -   | ५३ |
| २४. धर्म धातु -     | ५५ |
| २५. भुवतंत्रय -     | ५६ |
| २६. काली हृद -      | ५७ |
| २७. असुरसुर -       | ५८ |
| २८. नविकर्मोत्कल -  | ५९ |
| २९. जगत जननी -      | ६० |
| ३०. स्निग्ध नील -   | ६१ |

|                    |    |
|--------------------|----|
| ३१. भवजल -         | ६२ |
| ३२. अपघ्नन -       | ६३ |
| ३३. वामिकला -      | ६४ |
| ३४. अरुणावरी -     | ६४ |
| ३५. शून्य भूर्ति - | ६५ |
| ३६. कापोतर -       | ६५ |
| ३७. काली हृद -     | ६६ |
| ३८. बुद्ध बुद्ध -  | ६६ |
| ३९. दान वहीन -     | ६८ |
| ४०. मध्यगत -       | ६८ |
| ४१. धिरमय -        | ६९ |



25

15

10

5

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35





[illegible]

三

III

122



25

15

॥ ग ॥ ल्यानि नामसंगिनिमरुमां ॥ ११ ॥ यदिह कथिनावर्धे राविषर्ग फना गवध  
 पुष्पना भुसंवधः पाहावकयनपन ॥ १२ ॥ नायं मा लमाहा कनु पायासी  
 संयगीयन ॥ महावज्रधनदष्ट नंययमनु धानिही ॥ १३ ॥ महंवेनाधनयी  
 धामिनिर्ग्यानकृष्णसय ॥ यथाहगवाद्गहं नाथ तवंसंवधगु सधकु ॥ १४ ॥  
 पुकासयी धसत्ताधी यथासधविशेषक ॥ अगवज्रगनासाय मस्यधक्षन  
 सनय ॥ १५ ॥ जेवमधस्यगुयथा वरुणाधीकथागह ॥ रुमधलीयका रु  
 त्यापेककायलिनीगुह ॥ १६ ॥ अथरवनासनगथाषादस ॥ ॥ अथसा ॥ न ॥

10

5

कमनिहगवान् संवधादिप्रदाहम ॥ निर्ममयोपदाहिना स्वदिहा स्वमया  
 दुवान ॥ १ ॥ स्मरुदर्थलाकानां मयायकयभाधन ॥ उलाकलासकनः  
 धीवठुमांलानिभासन ॥ २ ॥ छिलाकमापनयंसा पुका मधुनयंगि ना  
 पुष्पलायकगुक्की वरुणाधीमहावस ॥ ३ ॥ साधवज्रधनयामान साधन  
 वरुणानय ॥ यमरुगडीनाभयं नराकनक्षयाविक ॥ ४ ॥ महार्थनोम  
 संगीदिपनिशमयनातनी ॥ मरुधीसनसत्त्वय मरुअउसमय ॥ ५ ॥  
 कलाधुदसयामिष अहंकगुक्काधिय ॥ ६ ॥ नामकागुमना कलाधुल

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35











25

15

॥ ना ॥

य ॥ १ ॥ दमरुमीश्वरीनाथ दमरुमिषमिष्टि रु ॥ दमरुनविमुद्रात्मा दमः  
 स्तनविमुद्रधुक् ॥ २ ॥ दमाकाभादमाथार्थः मनिंदादभवत्तानिह ॥ अम्य  
 यविमार्थकाभो दमाकाभावमिमहान् ॥ ३ ॥ अनादिनिष्ठयकासाशुद्धा  
 साकथकात्मकः ॥ हकवादि यथावादि यथावादि कथाकालि मने नयान् ॥ ४ ॥  
 ॥ ५ ॥ अहयाइयवादीव हककाटि यवलिह ॥ नेनात्मासिंहनिर्नाद कटि  
 र्थमगहिकन ॥ ६ ॥ सर्वदुःखमायगमि कथागममशकवे ॥ किनाकिनानवी  
 कयिचक्रवर्तिमहावल ॥ ७ ॥ गनान्ध्यागनावायो गलाभ्यगधपकिवसि ॥ ८ ॥

॥ १ ॥

॥ ८ ॥

10

5

महान्त्पवभोनया अनंयथामहानथा ॥ ९ ॥ वागीश्वनवायमीवाग्मी  
 वाचसंहिनर्धरगी ॥ मयवाक्कयवादीव यदुसस्यपदसक ॥ १० ॥ अवेवर्ति  
 कयनागमि स्वर्णशेकेनायक ॥ नानानीर्यानेनीर्यामी महारुहकका न  
 थ ॥ ११ ॥ अहंकीश्वरीवहिकुविना गमिनिष्ठिय ॥ अमयाफहपयका  
 भीदिरुकाकनविल ॥ १२ ॥ विद्यावनक्षसोपन्न भुगमीलाकवित्यन ॥ नि  
 र्मभोनीनहंकाल तयइयनयलिह ॥ १३ ॥ संमानयानकोटिह रुहक  
 यस्तुल्लिह ॥ केवल्यस्तनिल्लरु यस्तुल्लिह ॥ १४ ॥ सधभा

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35



॥ ना ॥ धर्मनाहागा लोका लोककनपन ॥ धर्मधन धर्मनाहाना ॥ अथामारुणपद  
 सक्त ॥ १२ ॥ सिद्धार्थसिद्धिसेकला सर्वसंकल्पवर्जित ॥ निर्विकल्पकयाध  
 रु धर्मभाउपनायय ॥ १३ ॥ अथवापथसक्ताना ॥ हनसनाकनमह  
 सनवांसद ॥ सना ॥ सक्तानदयसंरु ॥ १४ ॥ साधनाविधनागागा ॥ १५ ॥  
 नाध्याधियापदि ॥ पुण्यासवयवचन ॥ यनमार्थरुकायय ॥ १६ ॥  
 यरुकापासववडा ॥ यरुसनासकविह ॥ पयवडासमकरोपयनडन  
 सेगय ॥ १७ ॥ मनरुसर्ववडाना ॥ चयययभावन ॥ यरुकायववथा ॥ १८ ॥

निधर्मयानिरुवाकह ॥ १९ ॥ यनेकहावावजासासथाजनिगस्यनि  
 गगसाहवस्ययंरु ॥ पुससनानलामह ॥ २० ॥ वैलाचनामहादिपि  
 हनगागिविलावन ॥ गगस्यरुपसनाका ॥ महाकअपुलाभन ॥ २१ ॥  
 विद्यानागापुमकु ॥ मकुनागामहार्थरु ॥ महाकअविभवदभीवियस्य  
 ॥ २२ ॥ सर्ववडासकावाय ॥ गगसानंदलावनी ॥ विभवनीविश्वमावय  
 कामाभामहानिधि ॥ २३ ॥ कलंडयाधनामेडि ॥ महासमयमकुधु  
 नलडयधन ॥ अष्टकीयाभारुमदसक्त ॥ २४ ॥ अभापुपामविजयिव



॥ न ॥ कयाः मम गृह ॥ वज्रं कुर्यान्मम पाशं वज्रं हेमवर्हि कन ॥ २० ॥ **॥ अवि ॥**  
 इधर्मं **॥ कृत्वा नाम आयुर्विभक्ति ॥** ॥ कुटुम्बार्थं मखा हिमं पञ्चनुरव  
 दूजावली ॥ इष्टा कला लके का मोहलाह मगका नन ॥ २१ ॥ यमा क को  
 विद्युनाजी वज्रदेव गुरुयं कन ॥ विद्युदेव का कुर्यात् माया वज्रमहादेव ॥ २२ ॥ ॥ २ ॥  
 कलीराख वज्रयनि वज्रम ॥ पुनरापम ॥ मन्त्र लेक कता गोप ॥ मज्जवर्मप  
 मादधु ॥ २३ ॥ होहा कनाम हाथान हिहिं का मोहया वज्र ॥ अटहा लमहाह  
 मावजहा सीमहावल ॥ २४ ॥ वज्रमस्तमहासत् वज्रनाजी महासत् वज्रं ॥ न ॥

॥ मम मादा वज्रं कालं कुर्यात् ॥ २५ ॥ वज्रवान् यथुधमा वज्रस्वर्गनिह  
 कन ॥ विषय वज्रधमा वजी चकवती नधीजह ॥ २६ ॥ वज्रला कलाना अ  
 कला निना वज्रं वज्रं वज्रं मम मादा वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं  
 माकुलं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं  
 ॥ २७ ॥ वज्रमाला धनधीमात्र वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं  
 वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं  
 उयर्थक धारवां धाववमां वन ॥ २८ ॥ ॥ अटहा लमहाह मावजहा सीमहावल ॥

25

15

10

5



25

15

॥ ना ॥ कथमाहूतनेनासा हूतकाटिननजन ॥ १ ॥ नमोवादिदिवंहागमिनायनः  
 गहनं ॥ १ ॥ धर्मगोथातहागंधा धर्मगतिमहानवश ॥ अष्टमिहिननीर्वा  
 र्हादभादिधर्माइन्नुहिश ॥ २ ॥ अन्यायमा नाराग नानाधामनामय  
 सर्वनपानरासथी नस्यपयुक्तिवन्धुका ॥ ३ ॥ अष्टधियामहसाधामि ॥ ४ ॥  
 दुकमहाधन ॥ समुक्तिनायमार्गका धर्मधामहादय ॥ ५ ॥ ॐ लोकेकदा  
 नाशो ॥ ६ ॥ विनाहृदयप्रयकि दार्जिगलखाधनेकाकप्रेलीय ॥ ७ ॥ न  
 ॥ ८ ॥ लोकेसनपुष्पाय्यो लोकावाय्यविमानद ॥ नाथसुताहिलोकाय ॥ ९ ॥ म ॥

10

5

सनेभाकानिनरुन ॥ १ ॥ गगनालगसंतागसर्वरू सनसागन ॥ अविद्या  
 दकसंरुही हवयंरुलदानध ॥ २ ॥ समिनास्यसंक्रम संता नोर्ध्वशानग ॥  
 सनाहियाकमकूटसंम्यकैवडहखन ॥ ३ ॥ अहंस्वरेहंस्वसमन ॥ ४ ॥  
 मोननकुमकिग ॥ सर्वरुमहानीमक आकाससमनाग ॥ ५ ॥ सर्वक्रम  
 मलाभीरुलुधुनधुगकिग ॥ सर्वसत्यमहा नारागमुहासाधन ॥ ६ ॥  
 सद्योधिनिनीमक यामवलीनिगुहिर ॥ महाविनामहीधनसर्वननाहुमावि  
 रु ॥ ७ ॥ महाकल्पनरुमिना महाहृदयमन ॥ सर्वसत्याधरुकरुहीरीकयसत्य



25

15

॥ ना ॥ वदुन ॥ १२ ॥ गुरुगुरुह कालरुतमयह समयेविदु सत्यदीपहावलसवि  
 मरुडयकाविह ॥ १३ ॥ गुनीगुहह धर्मस पुसकु मरु लादय ॥ सर्वमरुलेमां  
 गलकिर्दिल प्रीयसभुह ॥ १४ ॥ महासर्वमहासर्व महानभामहामरि ॥  
 कालसकुहिरुहिप्रमादधीयमसकि ॥ १५ ॥ वनक्षवनेदअष्टसनस्यम ॥ १६ ॥  
 नक्षममहारुयानिपदलो निस्यधरुयनासनी ॥ १७ ॥ सियिभीग्यसिगिभी  
 गिभीदिदिभीदिभी ॥ पक्षननय ॥ गिर्यय ॥ नकासवन ॥ १८ ॥ महावदु  
 भाभोजि बुध वनिबुधम ॥ नहारुयानिपदलो निस्यधरुयनासनी ॥ १९ ॥ ॥ न ॥

10

5

बुधविवांम ॥ वंम ॥ बुधनिर्वापपापवान् ॥ मरुमाअविभाजंमविमरुकिभं  
 रुमनिवा ॥ १० ॥ निर्वाधमिहकिभंमि ॥ यथानिर्वाधमरुका ॥ सवस्ववदुनी  
 सावेनाममयधिजय ॥ ११ ॥ जनमविनमविनलोकाकदावनिनामय ॥ सप  
 वडुगिरुडासा ॥ सर्वरुसर्वविथन ॥ १२ ॥ जनमानयमाव्यकनिनासासनिने  
 रुन ॥ निलनसर्वमाव्यिससर्वीमनाथव ॥ १३ ॥ विलनधर्मकाकेतासन  
 महयनयधु ॥ निर्वाकल्पनिनासाग ॥ सर्वसंवडकायधु ॥ १४ ॥ जनदिनी  
 धनवडा ॥ आदिवडुनिनेजन ॥ सनकावडुलोम ॥ सनकीर्दिकथमरु ॥ १५ ॥

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35



25

15

॥ ना ॥ वागीश्वरममलवादि वादिना इवादिपुत्रव ॥ वरकांदनावलिपुत्र ॥ वादिनिशपना  
 दिना ॥ २१ ॥ तमकदगीप्राभाय सज्जमानिहर्गम ॥ श्रीवत्समयुक्तदेकी  
 हाहामनकनयनि ॥ २२ ॥ महाविषयन ॥ अष्ट ॥ भलहर्गनिनहन ॥ अष्टम  
 यर्गकन ॥ अष्टमयिमाहमिपु ॥ २३ ॥ उलाकनीनकका ॥ अष्टमयिमाहमिपु  
 मुल ॥ दगादिग्यामपर्गक ॥ अष्टमयिमाहमिपु ॥ २४ ॥ जगदुक्तवीपुला ॥  
 श्रीकन ॥ अष्टमयिमाहमिपु ॥ अष्टमयिमाहमिपु ॥ २५ ॥ सर्ववृद्धा  
 महाभागा ॥ सर्ववृद्धा ॥ सर्ववृद्धमहाभागा ॥ सर्ववृद्धमहाभागा ॥ २६ ॥ ॥ ॥

॥ २६ ॥

॥ २७ ॥

10

5

मलविषयधी ॥ सर्वमलविषयधी ॥ सर्वमलविषयधी ॥ सर्वमलविषयधी ॥ २८ ॥  
 सर्ववृद्धमहाविह ॥ सर्ववृद्धमहाविह ॥ सर्ववृद्धमहाविह ॥ सर्ववृद्धमहाविह ॥ २९ ॥  
 वरकांदनावलिपुत्र ॥ विनागादिमहाभागा ॥ विश्ववर्ग ॥ कल  
 पुत्र ॥ ३० ॥ सर्ववृद्धमहाविह ॥ सर्ववृद्धमहाविह ॥ सर्ववृद्धमहाविह ॥ सर्ववृद्धमहाविह ॥ ३१ ॥  
 वरकांदनावलिपुत्र ॥ विनागादिमहाभागा ॥ विश्ववर्ग ॥ कल  
 पुत्र ॥ ३२ ॥ सर्ववृद्धमहाविह ॥ सर्ववृद्धमहाविह ॥ सर्ववृद्धमहाविह ॥ सर्ववृद्धमहाविह ॥ ३३ ॥  
 वरकांदनावलिपुत्र ॥ विनागादिमहाभागा ॥ विश्ववर्ग ॥ कल  
 पुत्र ॥ ३४ ॥ सर्ववृद्धमहाविह ॥ सर्ववृद्धमहाविह ॥ सर्ववृद्धमहाविह ॥ सर्ववृद्धमहाविह ॥ ३५ ॥

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35



25

15

॥ ८॥

विमुक्तधर्मेनात्मा सम्यक्ज्ञानरहस्यम् ॥ ३१ ॥ मायां ज्ञात्वा महाभाग सर्वमनुधी  
 यशप न ॥ अस्य धर्मस्य पर्यायकारिणस्य सान्नायक ॥ ३२ ॥ समकुरुदुःखमिति  
 किमर्हति गच्छति ॥ सर्ववृद्धमहागर्हा विन्धिनिष्ठाध्वक ॥ ३३ ॥ सर्वहावः  
 सार्वभौमः सर्वहावस्तुहावः ॥ अनुयायिधर्मविश्वार्थः सर्वधर्मस्वहावः ॥ ३४ ॥  
 ॥ ३५ ॥ एकजनामहाप्राज्ञः सर्वधर्मवधाध्वकः ॥ सर्वधर्माहिमं मया हृत्ता मे  
 न निनयसी ॥ ३६ ॥ किमिदं पुत्रनात्मा सम्यक्ज्ञानं विविधध्वकः ॥ यद्युक्तं  
 सर्ववृद्धनां सान्नायिपुत्राध्वनः ॥ ३७ ॥ प्रत्येकजनास्त्रनामथादावत्तामिसा ॥ ३८ ॥

10

5

वृक्षार्थसाधकः पनः सर्वायायविश्वध्वकः ॥ सर्वसत्त्वसुमानाधः सर्वसत्त्वप्रमा  
 नकः ॥ ३९ ॥ क्षमसत्त्वसुमानेन ज्ञानानीयदुपहान् ॥ धिर्गानधनधीमा  
 न्नीयं विरुत्तनपध्वकः ॥ ४० ॥ वाहदसुभक्तपदनीजयदरुनः ॥ धीन  
 कुरुदुःखज्ञातगमगमज्ञातगमरुनः ॥ ४१ ॥ एकयादनलाकाकनहिमधु  
 न्नाहल्लिखितः ॥ प्रकाशमिखनाकाकपादागुष्टनध्वकः ॥ ४२ ॥ प्रकाशं  
 यधर्माध्वनमार्थविनयनः ॥ नानाविहकिमार्थविहविस्त्रनसंरुति ॥  
 ॥ ४३ ॥ ज्ञानसत्त्वसाधनं किञ्चन्यकानि ननु धी ॥ रुवनागदकिनध्वकः ॥

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35



25

15

॥ ना ॥ य. न. ए. न. नि. ॥ १ ॥ अ. द. रु. उ. अ. ध. व. ल. ग. न. व. उ. अ. म. प. र. ॥ वा. ला. र्क. म. ध. ल. ए.  
 या. म. हा. ना. ग. न. ध. ए. र. ॥ २ ॥ अ. द. रु. नी. ला. गु. ते. वी. ना. म. हा. नी. ल. क. र्क. गु. धि. ॥ म. हा. म.  
 धी. न. य. र. व. धी. न. द. शि. र्क. म. र. व. न. ॥ ३ ॥ ला. क. अ. उ. स. ग. र. धी. म. डि. पा. द. प. ना.  
 क. म. ॥ म. हा. म. धी. ध. न. क. ल. व. उ. स. म. डि. त. म. धि. ना. ॥ ४ ॥ वा. ध. ग. र. गु. मा. मा. द. ॥ ५ ॥  
 म. ध. ग. र. गु. म. र. धि. ॥ अ. द. रु. म. र्ग. न. य. वि. सं. म. र्क. व. उ. म. र्ग. वी. र. ॥ ६ ॥ स. र्वे.  
 स. र्वे. म. हा. सं. र्ग. म. नि. सं. ग. ग. म. र्ग. प. न. ॥ स. र्वे. स. र्वे. म. ना. वि. म. य. स. र्वे. स. र्वे. म. ना. र. व.  
 ॥ ७ ॥ स. र्वे. स. र्वे. वि. य. र्थ. र्क. स. र्वे. स. र्वे. म. ना. र. न. ॥ प. र्क. र्क. अ. र्थ. स. र्वे. म. र. व. ॥ ८ ॥

10

5

सं. ध. वि. उ. द. ध. र्क. ॥ ९ ॥ स. र्वे. नि. र्था. ध. का. नि. र्क. स. र्वे. नि. र्था. ध. का. वि. र. ॥ स. र्वे. नि. र्था.  
 न. म. र्ग. र्क. स. र्वे. नि. र्था. ध. र. र्क. ॥ १० ॥ द्वा. द. म. र्क. र. वा. वा. ना. द्वा. द. म. र्क. ना. न. अ. द. ध.  
 य. उ. स. र्क. न. य. का. न. म. र्क. स. ना. व. ग. य. ध. र्क. ॥ ११ ॥ द्वा. द. म. र्क. ना. ल. स. र्वा. र्थ. ध. र. स.  
 का. म. म. र. वि. ॥ वि. स. र्वा. का. न. सं. वा. धि. वि. र. स. र्वे. वि. र. न. ॥ १२ ॥ अ. म. य. व. उ.  
 नि. र्वा. ध. का. य. का. दि. वि. र. वा. र. क. ॥ स. र्वे. उ. ना. रि. त. म. य. स. र्वे. वि. र. क. ना. र्थ. वी. ॥ १३ ॥  
 ना. ना. य. ना. न. य. ना. य. र. र. द. र्थ. वि. र. वा. र. क. ॥ य. ना. रि. य. का. नि. र्था. र. न. क. य. ना. न. ह. ल.  
 र्क. ॥ १४ ॥ अ. म. य. व. उ. वि. उ. ध. ला. ध. र्म. अ. द. रु. य. क. न. ॥ म. य. अ. धि. स. म. डि.







25

15

॥ ना ॥ ॥ दसदीगभ्रनिर्माभो यथावजगदर्थकृत् ॥ १ ॥ देवाकेदवदवतु भुनः  
 आरुणाधिप ॥ जमभलसुनगुन प्रमथ प्रमथ धन ॥ २ ॥ उदिर्ह रुवरां  
 नान उकसाकाजगजुन ॥ एषो न द भदिग लाक धर्मदान यकिमन ॥ ३ ॥  
 मेडीसेनारसेनद क न धावमवमिक ॥ प्रहरेक धन वास ॥ ४ ॥ मलानन  
 कृत् ॥ ५ ॥ मालालिमालेकिविने ॥ धुतो न रुया कृत् ॥ सर्वमालवमजग  
 सेवइ लोक नायक ॥ ६ ॥ सयपुत्राहिजायध माननीय धनी सुस ॥ ७ ॥ र्जनी  
 यममाताय नमस्त य नमगुव ॥ ८ ॥ उलायेक कृन्मनी ॥ नानसर्प कवि ॥ ९ ॥ म ॥

10

5

कम ॥ १ ॥ देवि य र गाहियपन श्वठ हि रुव उ न लुकि ॥ ११ ॥ वाधिसखा  
 महासख लाकाकिममहाधिक ॥ एल्लयानमिकानिष्ट पुल्लक लुत्तमार्गवीरु ॥  
 १२ ॥ मालावित्तनवित्तुर्वसर्वक सुगुपंगल ॥ सर्वायमानिकिजाक  
 या जनाधिप ॥ १३ ॥ धर्मदानपुनि ॥ अष्टनकुर्मार्थदतक ॥ १४ ॥  
 पायकमाजगतां निर्या न क ययायिनां ॥ १५ ॥ यनमार्थविशुद्धीउ  
 लाक धुह र ममहा ॥ सर्वसंपत्क न श्रीमानः मरु श्री श्रीमहावनध ॥ १६ ॥  
 कृत् ॥ १७ ॥ पकृद भम ॥ ॥ नमो भवदवरागुरु क कटि नमः



[illegible][illegible]



25

15

10

5

0

॥ ना ॥ मङ्गलमङ्गली ॥ अथ मार्गविशुद्धयं मायालनपारिक ॥ ६ ॥ गे  
 किनादानविपल्यश्मस्यार्थगर्भक वडा ना विषया केवसम्यकं वद  
 नीहेमि ॥ ॐ ॥ उयसंहा नमः ॥ ॥ अथ मायाजालपञ्चमसारमि  
 कायामहापागककापफिसमाधिजालपकलाहगवभीमरुथीसनका ॥ १३ ॥  
 प्रसाहगवभीसायमनी ॥ अगकलापिनाहगवने मरुथीसनसलस्य  
 हयपनमार्थनामसं गीदियमिसमाक ॥ ६ ॥ ॥ ॐ नमो ॥  
 वरुसत्याय ॥ ॐ नमो ननुयाय ॥ ॐ नमो वडाय ॥ ॥ विहननिकनका ॥ म ॥

शोभाकहिहामनिवोजयनीयनसंधे सव्यमाना ननाथे कुवलयदलनजानक  
 नियकगभउ समहवधुकरु सुर्वलाकहिरु ॥ ॥ यदवा संकिमचूवनकन  
 कमलमीनिलयवनजांणालकहं गमसुभीमनीकिनसे धरुसर्कधका ना  
 केलास्य मुविलास्यपुमदिनहदया यचविद्याधनडा रुमाऊं दानरुका मनीडा  
 लववनं आहुमायां सुर्ध ॥ गभर्धमधुलाराहुनविनलीविह नासनवनम  
 नि ॥ दिव्यदेवन्दनायेवलकवकलसेपीडीमाना सनाहिह रुनायहनायसाग  
 नाकमलयगिनिहक यचविद्याधनडा रुमाऊं दानरुका मनीवनवनं आहु

रुमाऊं दानरुका मनीवनवनं आहु



माया लुप्तं ॥ ॥ अथ दिव्यं नृणां समं भुवि निनमा भुपला भुवनं ॥ य ऊ आ  
 दिव्यवर्गं सन्नन नगनया नाकसत्किं न नदा ॥ ग भर्वादिपुमस्वाश्रयमदिह दया  
 सिद्धि विद्या धर्माणां गतिनायन धर्म पुमदिह मलयं ॥ अ उ माया लुप्तं ॥ ॥ मे  
 शालवै कवल वीयक नागपुष्प ॥ गं ॥ अरु मे न गु न व न द न क माये न नारु मे क ॥ ॥ ११ ॥  
 न व ना ग निवर्द्ध काया ॥ आया लुप्तं ॥ अ न नाय धर्म ॥ ॥ आया कि द व रु  
 रंगत सन्न कि न न द ॥ अ द यो पु व ल धर्म रुपाधिका ॥ व ड व न न स न ल व नि  
 निरु म न पु क ति कं नि भ व नाय धर्म ॥ ॥ आया कि द व म न ना य धर्मा न ॥ ॥ १२ ॥

भुवनं भुवनं यत्कलकोटि सकेनपि ॥ य इत्यहं कल्पमहे मनके नान्यमस्य ज  
 नरासमकं कं कला भुवनं फमना हवति ॥ कायं हि धर्मं यवक्ष्याम्येन अस्मिन् ध  
 लोके क नृणां नृणां ॥ निर्गनमा र्गं रुमदसकानं स इत्यहं नृणां नृणां ॥ अ ग का  
 नो म ना हि धर्मं यवक्ष्यामि ॥ आया ना ॥ अ उ का मा अ भु न स न ग धा सिद्धि ग  
 धर्वा नागा क का धा कि न नी भु ग न उ ह नि ह ना ॥ क व ना दि द वा धू जा ये वा प  
 वा ने न मु ह व न न मि कं म दी नी इत्यहं यं लं रु र्वा हं वा य मि पु म मि न ति न मा  
 कं मा हा या न भु दं ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥

१५ नृणां

25

15

10

5



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥  
 नयसि वगन उपाधि ॥ किं नयं किं हि ललाटपिण्ड इति न पृच्छ ॥ जितनिगावदाख  
 इविक कनकावर्णः ॥ स्तुत्यपमायकाजस्तनविनयनिव्यसत्पुण्यमनुनमि ॥ दश  
 बल ॥ १ ॥ नदनवनपिण्डु कायथकुडुगंडु मिरुवननहिरकडु ॥ मुलकांजा  
 लहंडु समस्तस्वरु लदाडु ॥ हनुनका नभील ॥ दशबल ॥ २ ॥ अशुनसुनग  
 नासागागजलागुहव सवालरुवनभागा ॥ लागसिडिकसदस्वपिकमनगभागा  
 अरुयासी स्वयं ॥ दशबल ॥ ३ ॥ उदयगीजिकरु विंडमकु मगाडु ॥

मिलनिकलहका ॥ वडुलउवयगा ना नविपनिमदला ल सर्वथा स्वपिपुफ ॥  
 दशबल ॥ ४ ॥ हिलदलानपाडु भोरनसिस्तसाकोडुलिकरुवननका त  
 र्वचसमसीज ॥ अविगहमदलांग सर्वथा स्वपिपुफ ॥ दशबल ॥ ५ ॥ अरुलरु  
 वडुका वाडसाईधवका ॥ जयनियमक लाय सामवकुपुवका ॥ असलकमलया  
 नि स्वपिपुफापिपुफ ॥ दशबल ॥ ६ ॥ हिमगिर्नसिग्वलांरु सर्वकापसीदि  
 शियनधरुनदकु ॥ गायुधर्मकीनिय सहगिनिवनयका ॥ सापिपुफडिहली ॥ दश  
 बल ॥ ७ ॥ कलीककुलिसपाधि इडियादा नयाना ॥ सूनपकिनपिसंयाति



उममंरुयता ॥ अतिस्नीसिषुसुपा कामयशुविमान ॥ दगवल ॥ ६ ॥ ववल  
 यदननील पशुलीकाजगु ॥ पुननियवनहकाविश्वकिर्हिसनपी रनि  
 नपिचिनसफ गहवासममक ॥ दगवल ॥ ७ ॥ कलिकजकलाप नक  
 कानानसाको पशुपतिनपिकाल ॥ संकुरुकेकदक समनमकलिकानक सापि ॥ १० ॥  
 पुकहसा ॥ दगवल ॥ १० ॥ हिमसमीकमसाक मयणानानसाक ददक  
 चिनहसाग ॥ लोडुलिसकिहका वल ॥ ११ ॥ सहिकस नवकिवावनन ॥ ११  
 वल ॥ ११ ॥ गजमखदगनक सर्वथाविग्रहका भविगक मदवाणि ॥ ११ ॥

पिरुगन गधपिलपीसुपा वानधीपानमसा ॥ दगवल ॥ १२ ॥ अरुसि  
 कुरुनील यऊसकि कलाय ॥ नवनपिनरपुषा पदमखकाकेह  
 का छिनयनरनयानि लपिपुफकमान दगवल ॥ १३ ॥ असनवसन  
 हिना निपुगामनयका ॥ वरविधिधविधाना पुनवदनाकदसा उरुयगक  
 विहीसा कपिनगपिपुफ ॥ दगवल ॥ १४ ॥ मखयहिहमहासा ॥ रुसवि  
 यागीनाया कदकुरुहमसिषा यासवालिकवर्म ॥ यिगकिउयनसका  
 ऊभाहिनाऊपिपुफ ॥ दगवल ॥ १५ ॥ जनवननकवल यऊदसा नग्य



वागिनिहूगीगगस्यवा ॥ लोकपालासु ॥ १४ ॥ अग्निगयनसगाऊ मपिना  
 कपिपुष्प ॥ दग्धवल ॥ १५ ॥ रुवजलनिधिमग्न भादसालाहकागमनी  
 कपीनकनाया ॥ आसीनामद्विना समुपहलहिना बालिसाकपिपु  
 प ॥ दग्धवल ॥ १६ ॥ अलननिंदलचनधमस्यपिपुष्प इष्टुविसानस ॥ १७ ॥  
 यनविषयापुधन ॥ कालमुहाशुरुल्लयनिवर्त्तमान जागंति यंसकन  
 जालनमासुहस्य ॥ १८ ॥ गीरथापूगाकलसगां निधिमग्नभायं ॥ इति  
 यगदिन सगाऊयनमासुहस्य कर्त्तमनिकापिसकनपिसुहस्य नडि यग

निधिमग्नभायनस्य ॥ १९ ॥ उपहानं कवकस्य सानम सुचलवच न स  
 नंदिमिलाधानं निष्पुष्पधिमनवि ॥ २० ॥ पुनपुहानं पुनमअस्तिना  
 नवि ॥ पुनसहोक पुनमव सर्वनवम पुंजनाममदथेयाहूयागतांगानि  
 र्दकथनमवृद्धस्य ॥ २१ ॥ उपहानं सुलज्जं शीयापुष्पविनंविनं चरुध  
 र्मसंयक् पुनमसामिदिनदिन ॥ २२ ॥ दुह्यालोकगुनमातामनी  
 जल ॥ सधर्मपुष्पनधयं हकनागदखजनिपुगां निहयं यनिस्वरु ॥ २३ ॥  
 कस्यस्य समपार्जिं कं खलमयागन्यहलोक ॥ विलयुष्प हस्यर्गा दग्धवला



प्रथमपुस्तकम् ॥ २६ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायाः प्रथमोऽध्यायः ॥ ॥ ॐ नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
किं कुरुते ॥ अधिस्तुत्याय माहास्तुत्याय माहा कान्धीकाय ॥ धीनमालाकनां धाय  
दवमन्यां संसनरुचनधी ॥ युक्तिहृत्तन्मज्जनानरुमनधी ॥ लाकन्यामाम  
सनध्यं नरुत्तुपालकनकां नरुत्तु ॥ १ ॥ मेमाभादधिमर्धनीमर्धनी ॥ धाम  
हानिसमाहिदरुत्तु ॥ नानाधिनयमादिनरुत्तु ॥ गहिमहाकुरुनास्तिविवर्त  
॥ २ ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायाः प्रथमोऽध्यायः ॥ ॥ ॐ नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

वनमवस्थाकस्माद्भावकंविनविद्यास्मिन्विद्यता ॥ ३ ॥ हृदमेनविद्युह  
नमश्च हृदमेगनायानितरुहं ॥ नाथमयाहृदपायमस्यवे नामयसं  
किंकायकरुहं ॥ ४ ॥ ऊर्ध्वविनसंकान्धनिष्ठं लावणियं रुद्रहिर  
सं ॥ कंलाकंभुजसमयसमस्तं गविकननकंविनसं ॥ ५ ॥ सं  
नायकविंविदमहिंसायज नमोहिदमपिपनिहिंसादिदनिर्ममत  
मानसपापं रुद्रयनाथस्मिन् विनायं ॥ ६ ॥ रुद्रमनसांशुनकादिभूति  
र्यकननकं पुनर्गतिनां ॥ कलाहृतीवसंमिहसंमत्तं नऊतिमनिहिकवसंमत्तं



[illegible]

इकसिध्या. सि. ॥ १० ॥ शिवमनुविगुदि ॥ सिद्धदुःखनिनयनदस्य. उ. उ. उ.  
जस्य स्वलोकासा ॥ ११ ॥ ऊ. ऊ. नवननविलावनहिना. विविधियाधिमहा  
रयहिना ॥ ऊ. नयिदुःखयस्यसनीना ॥ विनसंजनमागुधगमीना ॥ १२ ॥  
गनउवाधिगुहदाकिनी. गयाकियाकिसरायागिनी ॥ मनहिनीरस्यपन  
ऊमइलं पीत्यस्य स्वहिनहत्वा ॥ १३ ॥ ॐ. फिला. कस्यकेंप्रियमाने. म.  
यतिरुगवनमामकिनाथ ॥ नौमिरुमनदि रुमदि रुपाशो. नात्यकासभमा  
ऊनवाति ॥ १४ ॥ ॐ. विदिय. विदियचनमनसा. ऊ. ऊ. वहुपापं. व्याकूलव



एषा॥ निश्चलमयस्मिन्सकलं जयनमनिमित्तं हवस्तविकनं॥ १३॥  
 कललसंपदिममलाकभापयशविबिधकलीनम्यथा॥ कनारुत्वापायि  
 कइखं गुगमिहवक्ष्यास्मिन्भाऊ॥ १४॥ माहमद्वविनासनहकुलं  
 संसाजमहादधिस्यु॥ एहिबहुल्लापनवाहू लमुनइनिहनि॥ सागन  
 बाहू॥ १५॥ दसिगसगहानकनकलं लंपनिमवदइइखकसं॥ निः  
 किंरुर्जयमंमथमाना लंसीहिपुहवानवपाल॥ १६॥ सकलकमानः  
 निकिअनदहा लंपनिमपिनकगकधुदहा॥ हगवनमनयमकनधसिंध

नंजनविविधाकानक्षवध॥ २०॥ लीलाविकनिककर्षनीहंग लंपः  
 नहिकविषयंयासंघा॥ दिव्यधामसमाहिकविहं लंपावकुसाधनसः  
 विहं॥ २१॥ एनमखवकर्षनयिकनक्षानामयिनिभाषनकनाकि  
 हवा॥ वीधमिहमाहमहानगदल विषयसुलिनाकगलं हवक्ष॥ २२॥  
 सकनरुनाथीपुकिपाकनक्षानाकिं हवक्षानियननहूनना॥ कननऊली  
 षदिमगं नं हगवनपननामाविनननं॥ २३॥ नाथकिपाशव्यासवी  
 साना लंपवृथावजधनधना॥ हननननिरनननवहृदय सननि







लक आसन गङ्गाह सं॥ नमामि श्री कुरु नागं॥ अमन॥ १ ॥ ॐ नमो दिगं प  
 तिमह भवतं रुद्रिक वर्ध सस्वहिता दृष्यवाहन डिभुनह सं॥ नमामि श्री  
 उलाक नार्थ॥ अमन॥ २ ॥ अर्द्ध दिगं पति अदिना नायन म्भानवर्ध  
 सस्वहिता॥ कर्म आसन चक्रह सं॥ नमामि श्री दामोदनं॥ अमन॥ ३ ॥ २ गं॥  
 अर्द्ध दिगं पति बुध सनं यीरु वर्ध सस्वहिता हं स वाहन पुरु क ह सं॥ नमा  
 मि श्री नीलजनं॥ अमन॥ ४ ॥ ॐ दि श्री दामोदिग लाक याल स गं मुठ  
 लुमाफ॥ ॥ अं नमा सानदाय॥ ॐ अदिद जगता वंदिरु पाद पदं॥ हं सा

सन डिनयन सुरु मङ्गलाय कमु नि कुं क म स वा ति रु द ह द वी॥ सानदा  
 सकल सिद्धि सदानमामि॥ ५ ॥ ह मालयं विमल सल्लि क पाद नृपि नय  
 लक्ष्म लजल कन कानिपी॥ श्री काली लं वरु वन भवन विड नयी॥ सान  
 ॥ ६ ॥ वदं रु नोद गुन सं वप का सि रु न गणी भ नी छि वन भवन विभ नयी  
 सार्थ नवं सकल पल्ल क ज कु माल॥ सान॥ ७ ॥ नृपं वि ल म्प स सि रु न  
 क न भ नयी॥ गनी म नो रु न भु हा नि रु यि य र्वा न नी ना स नान यन य र  
 न रु स्य रु नि॥ सान॥ ८ ॥ सें सान सान अ व ना रु ज स्य साना॥ र वान ना



अपमनाधिकिं न नाना वां दामना न धनया जनति धियं ल ॥ कसान ॥  
 ॥ ३ ॥ कस्यंगपंगयनिपं निरुतां वनामं ॥ पणसवा अगुस न नय  
 जिनानि निपुं पुनं स्थितिलसा न अमकं तावं ॥ कसान ॥ ३ ॥ संयर्थका  
 षट् अ अजय सानरास ॥ पातालम अहिलसानयपरि कानी ॥ मलादि ॥ ३ ॥  
 वाक् सन जीविक सर्वयकि ॥ कसान ॥ ३ ॥ खरकपं मनु अरु दिम मनु  
 नाका ॥ सर्वार्थसाधक रुना गुगि विरु मवं ॥ ल सन लम वम इ ख विनासः  
 यकि ॥ कसान ॥ ३ ॥ वृद्धि श्री सा लय सजी सु डं समाप ॥ ॥ अं नम

वृद्धाय ॥ श्रीधर्मधाम्नि नवनवेंद्रिं पदयंकजं ॥ मसिद्धदमपूरुमा  
सिद्धामिवापनिमथुलं ॥ १ ॥ नमामुशेषकृतिनवनः धर्मनामा महामनी  
यनशेषद्विनाथं पापनासि विषयिगु ॥ २ ॥ वधुमथुलमध्यसंलिङ्गं च  
कृष्णनिमहामनी ॥ सिद्धमानधनायमनिवः शोकवर्त्ममहाहल ॥ ३ ॥ प्र  
यादिगंलिङ्गं ॥ नुनीलसमदकिमानधनाजिगु ॥ घसमसमसखध्यानध  
निकवृद्धाननाहामनी ॥ ४ ॥ याम्यादिगंलिङ्गं नल नलसंरुवदनि  
डलायं संपनिता ॥ दुनेगमानहकावननारुः वनेदहलसहसिहना ॥ ५ ॥



पश्चिमदिगंस्त्रिभुजायमनिवनः॥सप्तपुरुषिनायायिना॥मयननासन  
 ध्यानध्यानिकपद्मनागमनिपुर्ण॥ ॐ ॥उरुनदिगंस्त्रिभुजायमनिवनः॥  
 सामवर्धस्त्रिभुजायमनिवनः॥गानधुमासनअरुयकनवनः॥सर्वसत्त्वध्यानिका॥  
 ॐ ॥श्रीवज्रसत्त्वमनवनिवज्रधुमासनिका॥विश्वनायिकजगदना॥ २१ ॥  
 ध्याननागध्यानवदिना॥ ॐ ॥अकिचैपकमाननिवनः॥मानयभुरुकककि  
 णानिकाकककधुधवनः॥नागकमनपकिर्ण॥ ६ ॥नारिसिन्धुकपूनकूमव  
 उन्ननविनपिका॥विविधियथाकमलउत्पन्नविनयसंयुक्तायिका॥ २२ ॥

श्रीनारवसासुदगमनूजासखवायगुमङ्गला॥ललाचैधमीमाहगाउन्मीही  
 पदकिना॥ १० ॥उरुजालिकाकपालगुह्यासमनानमा॥उदिवदि  
 नदवपुषाभाहन्दिगमालिका॥ ११ ॥वर्धनपिकभुकिनधपुर्ण  
 नउत्तनीर्मना॥दवमानवयजकिन्नननागलाकसपकिना॥ १२ ॥  
 कायकाकिर्णनिर्मलविर्दगधसपदजका॥२३॥दुग्धयुगायवामल  
 यधसदमनान॥ १३ ॥उयादगहमीदुज्जालि॥आहिमासुमनोरु  
 के॥हनिहन्वक्रपनदनदवत्तमनसपकिना॥ १४ ॥गुंनारिगुन्यमहा



25

15

10

5

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35

पुन्य सर्वस्य निनेन ॥ नीलान्ननिनाकाल वाद्युद्धिमनासय ॥ १० ॥  
 श्रीधर्मकाउभयं दुर्गादि वेषनपुष्पासिमा ॥ देवाकिदेवमहादेव सर्वदे  
 वपुष्पासिमा ॥ ११ ॥ नोनवपुमाहाननक पञ्चननननमस ॥ पूर्वजन्मक  
 नयन स्यं वकाजन्मपुष्पासिमा ॥ १२ ॥ अष्टमहि सर्वसिद्धि हवकुहवहयम ॥ १३ ॥  
 किंद ॥ वेषगर्हमहासुनसि स्यं वकाहिपुदकिरी ॥ १४ ॥ सफस्यं ववम  
 न्मवलिङ्ग नाककस्यस्यनं ॥ किंकिनाममहाजाय नस्यजन्मरुपावने  
 ॥ १५ ॥ नामभावने ममल्लहानिक वृद्धमनवीस्यमा ॥ वेषसर्वनका

नवर्दिन सिद्धिसुखसमकिंद ॥ १६ ॥ दानिडनीनयसमनमना उर्ध्व  
 त्महामन ॥ अष्टमकुपुदकिनाय पुष्पावहिननपुष्पासिमा ॥ १७ ॥ पुष्प  
 श्रीवेषवर्ध श्रीकलाउं समाप ॥ १८ ॥ अनमोनाकनीधाय ॥ सर्वहृद  
 नीकं पिकमुहं कानि मववनि कलजनपं ॥ सर्वनपेवनदिव्यपुष्पासिमा  
 मामिदमवननपं ॥ १९ ॥ हंगिनायसिपिक इहकर्म कानि नायसिदिदि  
 व्यपुष्पासिमा ॥ मनीषनीनम्य इहकर्म कानि नायसिदिदि  
 मीवकुमुकुमदिदिमलाह ॥ कर्मइहह दिगकिविमलाह ॥ नामस्यक

सर्वहृद  
 पु



मधुकेचिमलार्कः ॥ नमामिदमवनवनमार्कः ॥ ३ ॥ यत्कृत्ययदिसादि  
 कवकं सर्ववृक्षमनिरुं पुरुषकं ॥ वडपं कजिनरामलवमं ॥ नमामिद  
 मवनवनवसं ॥ ४ ॥ नस्मिस्तुभुंजिविदुस्तुमधि ॥ यथा सर्वसदपरिहम  
 धि ॥ नस्त्ववर्षसदपरिहमधि ॥ नमामिदमवनवनमधि ॥ ५ ॥ नडयकाक ॥ २६ ॥  
 विनेविहमीष ॥ काकनं दुडवलापिहमीष ॥ नडयिहानस्तुहिरमीष ॥ नम  
 मामिदमवनवनमीष ॥ ६ ॥ दिष्टिसनमकृतामक्षिमकृते ॥ चडपुहामक  
 कामनीमकृते ॥ आगकभिषमकृतामक्षिमकृते ॥ नमामिदमवनवनमकृते ॥

॥ १ ॥ वानुयेकजदिनायकनडं दिव्यसुनविपनायकनडं ॥ नमामिदम  
 रुसस्तुनडं ॥ नमामिदमवनवननडं ॥ ८ ॥ शुद्धकर्मपुरुषाहिरकर्म  
 शुद्धसुनवनशुद्धकर्म ॥ शुद्धसुनवनस्वहिरकर्म ॥ नमामिदमवनवन  
 कर्म ॥ ९ ॥ शुद्धकर्मसुमिणालुलदके ॥ शुद्धसुनजननिर्मलदके ॥ विम्वप  
 कदमपेवसदके ॥ नमामिदमवनवनदके ॥ १० ॥ अत्रवाक्यसुनाशुनमि  
 द्वाधर्मसुनकुरुपापकजिद ॥ गन्धधूपसुनाशुनमिद ॥ नमामिदमवन  
 वनमिद ॥ ११ ॥ मयसुदरिहनादिधारवं सकधर्मनयशुद्धिदधारवं ॥ दिव्यका



दिपनवादि कथावं ॥ नमामिदमवनवनथावं ॥ १३ ॥ शिवगीवदगणी  
 वगुगीवं ऊर्गिविर्कवगिवसुगीवं ॥ हभवर्हमधीयीवसुगीवं ॥ नमामि  
 दमवनवनगीवं ॥ १३ ॥ सिंहनयाहिमकुसुकाय ॥ ध्यानकायगुहसा  
 गनकाय ॥ मूढगुनऊधनिर्मलकाय ॥ नमामिदमवनवनकाय ॥ १४ ॥ ॥ ३० ॥  
 रधनकहनीमदिहवसं नीलपीकहनीमदिहवसं ॥ हनदेवनगुमलि  
 कवसं ॥ नमामिदमवनवनवसं ॥ १५ ॥ हननागकनेसं हनवाहूयय  
 ॥ हनवनसाहिरुवाहू ॥ धिनविर्यगुमनाहनावाहू ॥ नमामिदमवनवनवाहू

॥ १६ ॥ रामनवक्रविरुषिरुहसं विमलंककामलंककहसं ॥ हनप्रकृ  
 ननागकहसं ॥ नमामिदमवनवनहसं ॥ १६ ॥ नागदखनवर्जिरुवि  
 हं भीलसुनसमहाविरुविरुं ॥ कलकाटिसमनाहनचिरुं ॥ नमामिदम  
 वनवनचिरुं ॥ १६ ॥ यमनारुं गुरुस्वहाहिरुनारुं यमजानीधुनिर्म  
 लनारुं ॥ वक्रऊनिधुस्वहाहिरुनारुं ॥ नमामिदमवनवननारुं ॥ १७ ॥  
 लऊधचक्रविरुषिरुपादे मूकगभक्तिविनाजिरुपादे ॥ नागयऊगभवेदि  
 कपादे ॥ नमामिदमवनवनपादे ॥ १८ ॥ हासनायदकिनाजिरुपादे देव



दानवपुत्रादिनापादं ॥ सर्वद्वगधपुत्रिनापादं ॥ ननमामिदं वनवनपादं ॥  
 ॥ ३१ ॥ सर्वद्वगधपुत्रिनापादं ॥ गुण्यकादि समुद्राविनापीर्व ॥ दिव्यहले  
 हलीकादिनापीर्व ॥ ननमामिदं वलवनपीर्व ॥ ३२ ॥ पृथाधपसदयजि  
 नपीर्व दीपगंधसकनं वपीर्व ॥ नाल्यवस्तिरुवयुक्तिरुपीर्व ॥ ननमामिदं ॥ ३३ ॥  
 गवनवनपीर्व ॥ ३४ ॥ उरुवनधर्मस्वामिः उरुवनस्यगुनमवकुं संकुं  
 सगतिरुवत्तु उमकादिदिहि ॥ पृथगितरुनं यथैकिनतुगुरुस्यवयक  
 र्थ ॥ ननरुवतिरुनभाऊ स्यथानिगमनं ॥ ३५ ॥ ॐ नमो श्रीं आर्यावली

किरुचनस्यनयकशमु उं समाफ ॥ ३६ ॥ ॥ ॐ नमो श्रीं आर्यावली ॥ रुद्र  
 लाकनाथः श्रीमं रुद्रमाना ॥ माहाविनजागरुनिपालमधुलं सननवन  
 ध श्रीरुद्रलाकगुनं वरिद्वनधमरुद्रमाना ॥ ३७ ॥ ॥ रुद्रलाकक  
 मानरुद्रलाकविधि ॥ रुद्रलाकगुं धुनमरुद्रपीनयं सनक्ष ॥ ३८ ॥ काय  
 वाकविद्वयायमाऊपुदाका ॥ दानिइइइवविधुमाऊनदाका ॥ सनक्ष ॥ ३९ ॥  
 दिवननरिद्वनउं गुधसुनदाका ॥ सिद्धिवनपुसादाका माऊपुदाका ॥ सनन  
 ॥ ४० ॥ ॥ दवगुनरुर्मननागमथर्व ॥ सर्ववदिरु सर्वयुक्तिरुनाम ॥ सनक्ष

॥ रुद्रलाकक ॥  
 ॥ ३६ ॥

25

15

10

5



॥ ॐ ॥ आदिदग मयनाजि न नाथ ॥ कनका निहा ध्वनि दे कपाद ॥ सनन ॥  
॥ ॐ ॥ निपाल संवद लालिचन वद ॥ धृष्ट सुधि माय मातं मरु श्री सनदी  
सनने ॥ ॐ ॥ कि श्री मरु श्री गी कमु उं समापा ॥ ॐ ॥ ॐ न मान लय  
याया ॐ न मा वधाय ॥ आदि उरु यरु न नी श्री पक्षपा न म नाजिनं डिद म  
उवनं धिप किद ग प्राद रग न मा मुक ॥ १ ॥ हनिह नवु क्रा सकल नाग  
मरु स ना सन ॥ वरु विधी उप हान पुष्प मो न गुली हन ॥ २ ॥ पुन मा नि  
महा वरु यरु ना य प्र का सिनं ॥ विं व र श धा न ग य नी ॥ ३ ॥ रु रु र्द न मा मुक

[illegible]



ॐ नमः ॥ मनसल्लपसंस्कारवज्रसत्त्वं नमामुह ॥ १ ॥ कालितर्पकपिह  
 न नपा लरुवननं थल ॥ धर्मजात्मानरुधीन दुडिनारुवनस्त्रापिता ॥  
 ॥ १० ॥ धर्महमिगिनिगुहा वडनमनाहनं ॥ हमवर्धनमडा नागभइग  
 नमामुह ॥ ११ ॥ धीविपम्बिककं दुदु कनकमनिमिधिनानिनं ॥ विधुव ॥ १२ ॥  
 नकाभयः श्रीमाकसिंहनमामुह ॥ १३ ॥ धीविनानागिनिवन वासिकंगुग  
 नग्वनी ॥ धर्मपालमहाजायदोर्लकं यदपायजं ॥ १४ ॥ धर्मइतसर्वहनद  
 हविकि किं न्याहं ॥ आर्यनावावडसनध कत्वसाननमकिदं ॥ १५ ॥ न

नमः ॥ विरुगुफ पापपथधर्माधिकं ॥ यथमार्गयेयुहकि सर्वपापविनास  
 नं ॥ १६ ॥ गुनदगडयकानि धर्महनिनपालिकं ॥ विष्णुधायिकपापविन्दु  
 दवमाऊनमकिदं ॥ १७ ॥ मखरानिमायाजाल धर्मवाकसूक्तनिकं ॥ १८ ॥  
 हनमगहयुध वायुकिपदपंकजं ॥ १९ ॥ धर्मवेष्टरुजयन वडधर्मप  
 रुदिनं ॥ यवज नमरुलपापसर्वानदहनमनं ॥ २० ॥ रुकिमकिनि  
 रुदिनं ॥ सुकासुमिधर्मवनं ॥ विसडं वकिरुवगा नागलायमलपुहा ॥ २१ ॥  
 किमिमनं ॥ रुकर्म हनिडइष्टवककानर्ध ॥ वडधर्ममहामनि सर्वइष्टव



विनासन ॥ २० ॥ गुवञ्जविनददं किंपेन्याकिरुलरुलं ॥ गुवञ्जगुरुका  
 लि कर्तनामलनासनं ॥ २१ ॥ मञ्जुनिथरुवकि सर्वइ ४ रवककानर्थ ॥  
 रुमरुनसमनष सर्वलकिदपदं ॥ २२ ॥ दिनरुक्रमहास्महा नागद  
 रवीवनासनं ॥ गुमनषसर्वपापं गुरुकिर्दिनमामुरु ॥ २३ ॥ गन्धपय ॥ २४ ॥  
 यदीपयजनायप्रभादिहं ॥ रवकदुपनापवामल नाहनायनमामुरु ॥  
 ॥ २४ ॥ मनिमनसमनंरुन वांदिहं गुरुलाहलं ॥ दिनगुधसुनआलः  
 माकमार्गसंपादं ॥ २५ ॥ रजिगीआदिद्विगीकलाहं समाप ॥ २६ ॥

॥ ॐ नमः ॥ ॥ १ ॥ गुधलकमदार्यावलाकीरुव नायविन्धविन्धमनविनिर्जि  
 रुदरुवनवनविनाजिह ॥ सकरुनपकि मोनिनानिगपादयंकुरुहं  
 सर्वरुक्तकनधसुनसिजमरुपनिमन रुक्रमनोहेजुविविधमजिगधदह  
 मधुल इलिकरवमुनहं ॥ १ ॥ रुकिनमोनमिनारुधनध सकलनिनेरु  
 नरुवमानेध ॥ विपनकमलनिसाकनासनसमनसासनहं ॥ २ ॥ चानमख  
 रुवचुहानसु वजसंगिहिरुनीवासन विपुवयरुयकुरुनीवासनललि  
 रुनासनहं ॥ ३ ॥ पागनिसिहसुदं रुमसुग चापसारिकपानिकनरुग ॥

विपुवयरुयकुरुनीवासनललि  
 रुनासनहं



नकुचतनरुगसचकनसर्जननंऊनह२॥ भयकृष्णमसूहावमिनमदः॥  
 ननवनवासकृत्यल आगनिर्जित विविधमनीवन रुकागुषकनह॥ ३ ॥ वा  
 मदकिधरुकादिगानिनिधरुगनवनवासकृत्यन संगनगसूधशुबाननिक  
 ननिसमानह२॥ नयनीविमनसः भोजगुदनः धूमिर्विनिन्दक ललितमधु ॥ ३ ॥  
 लः कामिनिर्जनमानहानकविघ्नयनकाह॥ ४ ॥ विविधः वृद्धिगुप्तिद्विदा  
 यकः मधुजनमधु वृद्धिगायकः सार्यललितो विलासः भवनः महिषुनभवनह२  
 वंभनदहनि उधनपकि नूपकजियसकलननपकि हानयनिहकमानका

ककिविधसमकह॥ ५ ॥ गनसमर्वनरुविहविहवननरुगनरुवन  
 पार्विकः वेनिवलनयसमनधारकिः कापयापिकह२॥ वृद्धनीचिन्विनिनिदा  
 ननः सर्वजनवननयनकाननः रुकयवदिविबानधः छिगधनानध॥ ६ ॥  
 रुवनसिधिविनासणननः इच्छादिगिसकिः हुरुविनायनः वंभविष्णुमहसंहावः  
 नकनिविधाकनह२॥ विदभदनसनपग्रविन्ननजननसंहाकिः रुनीकहननवह  
 गिसंयुक्तिस्किविनहनसिद्धिदवनह॥ ७ ॥ वक्रावृत्तसूदनकानधः नि  
 षिनचउसूधासूवाधकगगनमधुलनगननायकः पञ्चसायकह२॥ पञ्चनग



मननिलाधसाधक कथिननिधिननिनकवाधक कलननयस्वमिवहानक  
विद्युदामकह ॥ टं ॥ अगपनिचिनि विजिननमिपमि रागसंगीतिरुवति  
कुरुनति स्वनदासनहृष्टरुतिरुति दिनजनगतिरु ॥ मकट सुननिरुमी  
निमधुल गधुमधिरुविमलकधुल विपूनरुवने विजिनरुनकमल ॥ ३६ ॥  
निर्मलह ॥ ६ ॥ काविंउमेलयगायननपति सकलगुधवय ॥ इतंमनिः  
नीचनमस्यमीहंउवर्हसिदिवंधनह ॥ २ ॥ बहतिहिरुमीविनीविनिरुम  
विनिरुकनसमहृष्टरुमीमिरुमकिसेरुतावसविन ममनसंमिरुह ॥ ४ ॥

॥ १० ॥ ॥ विनीमहानाजधिनानाजउकविंद कययगायमलदवविने  
विनः श्रीमदार्थावलाकिरुधनस्य रुगुधालकालाहंसमाफं ॥ १ ॥  
॥ नभावद्वय ॥ अरुसिरुधुमसंकासदहायधुभरवदिलदासनं ॥ इनदाग  
नविद्युजिनः नमामि श्रीजकायमनूति ॥ ३ ॥ सुगकधुमनधमहाना  
॥ १ ॥ ॥ वलंरुकनननलाकसुं ॥ माऊवां रुमानसंरुि ॥ स्वमिच  
नधसनलपी ॥ सुगक ॥ २ ॥ दहिधमयश्रीनलसमरुव विरुवसंयददा  
यकं ॥ उदिरुधुवर्हसंकासंकासदहा ॥ नमामि श्रीरुनेगवाहन ॥ सुगकधु

नरसिंह ११

25

15

10

5



॥ ३ ॥ नवउदिरनविकिनधदहाऊगमननिधनिना॥ मयनवाह  
 नधनसंस्क्रि नमामि श्रीअष्टांगहवं ॥ सुगन ॥ ४ ॥ सफरुहिमयअ  
 लंरुताः हनिकवर्धुविनाजिना॥ उरुनमखश्रीअभाघासिद्धि नमामि  
 श्रीगनउवाहन ॥ सुगन ॥ ५ ॥ ॐ नृकमउरिकासदहाः डिदगहवं ॥ ३ ॥  
 प्रकियाजिना॥ सिंहवाहन धनमननि ॥ नमामि श्रीवेलावन ॥ सुगन ॥ ६ ॥  
 गगनीवंद्रकुमालवदनवदुलाधीनयानिना॥ गिरगंस्क्रि नृकगुनमाला  
 नमामि श्रीधर्मधरुसनध ॥ सुगन ॥ ७ ॥ ॐ निगीधर्मधरुगीसांठं

समापं ॥ १ ॥ नमावधाय ॥ रागपदुपर्वरुसीस्क्रि नमधि पचवइयकृन्नस्वनूप  
 २ ॥ अतिमयंकनक्षामयंनयं संरुनार्थनमयादंकमल ॥ १ ॥ चउसख  
 र्हुगुसुर्यसकृं ननसखि नवोदिरुसत्वरं ॥ यारुगुखदरिनाथसंरु ॥  
 संरुनाथ ॥ २ ॥ वमरिविदुनडमहस्वनदवं ॥ उयमयकृन्ननगन ॥  
 वायुअग्निनाऊसिवंदिरुपादं ॥ संरुथ ॥ ३ ॥ सवकथागरुवाधि  
 नसत्वं ॥ हिहुरि कृनिहिरुपकिरुपादं ॥ अरितसवदिरुमानरुनाऊ सं  
 रुनाथ ॥ ४ ॥ दानिडइषखविनासनकर्हः नागनउदनमाऊ सुदाना ॥

॥ अष्टांगपर्वरु ॥  
 १२

25

15

10

5



मार्जमुदभक्तवाधिनार्थं॥ संरुनाथं॥ ॐ ॥ श्रीगणेशाय नमः॥  
 तमाफ ॥ ॐ नमः श्रीगणेशाय नमः॥ संरुनाथं॥ संरुनाथं॥ संरुनाथं॥  
 विधदर्यामुदायक॥ संरुनाथं॥ संरुनाथं॥ संरुनाथं॥ संरुनाथं॥  
 योरुदकुरुवज्रकटकमेष्टुनै॥ संरुनाथं॥ संरुनाथं॥ संरुनाथं॥ संरुनाथं॥  
 ॥ १ ॥ ललितेनामविनेकिर्गकिल॥ संरुनाथं॥ संरुनाथं॥ संरुनाथं॥ संरुनाथं॥  
 ध्यानकानक्षनदनादपिसंदनं वकुलकुलवक्त्रं॥ संरुनाथं॥ संरुनाथं॥ संरुनाथं॥ संरुनाथं॥  
 मरिहर्ग॥ संरुनाथं॥ संरुनाथं॥ संरुनाथं॥ संरुनाथं॥ २ ॥ यथिनमा

नमि कुंधुर्क ममधुनमधु कविकासिर्द ॥ नमि कासिर्क कमलदाननयालि  
जातसमाकलं ॥ विविधसो नमि नकमान्ति वीचक धनिर्पनिर्द ॥ सकलदेणवि  
मश्ममधक नगुंरिर्द ममदिर्द ॥ ३ ॥ नकवहालयलासिकेसक कलिः  
कानि विरुषिर्द ॥ सनसमानवसानकेनव नकवहन नागिर्द ॥ नगनगुंरु  
गनसर्जक वन्दि लसिय भाहिर्द ॥ दनि उज्जिमपनसना नगविजियनकप  
निर्द ॥ ४ ॥ कदनिवदानि जम्बुवर्जन राज्यापिर्द साहिर्द ॥ नानिकनक  
पीष्ठ श्रीरुल किनिकादिहि नादुर्द ॥ विस्ववैनक लंवववून नदकध्विका



यिकं त्रिवचनकदीननिश्चलकिर्तिनीजननाथिकं॥ ॐ ॥ गङ्गान्तसभा  
जगद्गुरुमिधर्मभक्तसमूहं॥ आकासिंहमनिउवदिकमकुमाद्यषदकुने  
चउकाटिशुभीरुलसिद्धि॥ भुव्यकाटिसमूहं॥ नैनमामिपनात्यनंयनस्य  
यहधर्ममयंविदु॥ ॐ ॥ सुनसुसविदुनइनकषर्वादिर्घविश्वयकं॥ गङ्गा  
नाकसुनउदानवसिद्धिसाधसमाधिकं॥ कर्त्तिकानक्षपापमकुलयापिनंजनपा  
निकं॥ नैनमा॥ ॐ ॥ कर्मवचनकासनासनकर्मवचनकानर्थ॥ नयानय  
कहावलावकनिफनयकवर्जिकं॥ विश्वनयनिनयनिक्कलसर्गकानक्षका

सिद्धम  
नमो नमो ॥ ८ ॥ ककुजलुकमकुमलुकपर्यपङ्ककवर्जितं ॥ ककुजलुक  
मकुमलुकपर्यपङ्कककान्ठं ॥ अष्टनष्टिष्टुक्तिकान्ठं ॥ ककुजलुककान्ठं  
नमो ॥ ९ ॥ अनेनपञ्चमस्तु ॥ ककुजलुककान्ठं ॥ ककुजलुक  
प्रतिष्ठाविंशति ॥ मीतमानस्तु ॥ ककुजलुककान्ठं ॥ ककुजलुक  
नमो ॥ १० ॥ लोहमाहपुमस्तु ॥ लोहमाहनकान्ठं ॥ लोहमाहन  
कान्ठनात्मकनादिविष्टुविष्टु ॥ ककुजलुककान्ठं ॥ ककुजलुक  
यं ॥ नमो ॥ ११ ॥ अनेनपञ्चमस्तु ॥ ककुजलुककान्ठं ॥ ककुजलुक



कानक्षकाननारुक्॥ मायिनंगरुमायिनं॥ आदिसध्वमकासुवर्जि॥ भाऊकानभ  
 निर्मलं॥ कनमा॥ १२ ॥ नागनगिमसंगवर्जि॥ हंगिमदिकवर्जि॥ नागन  
 गिमसंगकानभ॥ हंगिमदिककानभ॥ हंसवाहानयापनासन॥ यन्नग॥ सनरुवि  
 रं॥ कनमा॥ १३ ॥ रुमीजिवनआसयासन॥ गभवाहानवर्जि॥ यामवः ॥ ४० ॥  
 र्जि॥ सर्वकानभ॥ नयनखविवर्जि॥ रुकिमूकिदसेवकानभ॥ नामभरुवि  
 निर्मलं॥ कनमा॥ १४ ॥ उवर्जदगनरुक्वर्जि॥ मकिदीकककानभ॥ आ  
 क्तिनाक्षिप्रमखवचनं॥ रुमवर्जि॥ माहनारु॥ निष्पुष्टनिनयसर्वगसच्चि

राममयविरु॥ कनमा॥ १५ ॥ रीवसार्जकसाकवेरुव॥ सोनदर्शनका  
 नभ॥ सर्वकानभकाननात्मक॥ यिनंगनमामिके॥ वडलसवयोवनारुक्  
 वानदियकसंरुवं॥ कनमा॥ १६ ॥ नियालयालययुगामभ्रनिमिकं  
 किलमरुतं॥ रुममकि॥ क॥ मकनऊधसयगुशवर्जि॥ विविधसिद्धिनी  
 ध्यानहंगन॥ मकमंसखदायकं॥ साकमाहविनासकानभ॥ मकमंकिप्रदकि  
 नं॥ कनमा॥ १७ ॥ नरुसिमासिविभययाजलि॥ मकमार्जविलगनकं॥ यथ  
 मिर्जनेरुविमालवंपुकि॥ बालसंगमिदायकं॥ विरुनपजस्थगवदायकं॥ स्व



25

15

उत्सवपत्र  
१२

जसोयसपरुदंकासकृष्टरुगदनानवि यमयथाधिनिगानध। नंनमा॥  
॥ १६ ॥ नपालसंभक्तसिन्धुगिनियरु अवधशुक्रयजुशुक्रयानिप्रतिव  
ना॥ यनियादजायज्जुवायाधर्मभद्रप्रतिविमलनिर्मलकाकुनाज॥  
मिथी३ महानाजाधिनाजरूपकगकविउ॥ श्री३ जयप्रतापमल्लदवनंविमल ॥ १६ ॥  
यंरुत्तकानकस्यस्तुं समाक॥ ॥ ३ ॥ नमोत्तमाकनाथाय॥ दुस्सापदी  
मरुवरुयंकनसर्वसत्त्वासंपूर्णवदनावरुप्रनहुं३ सर्वरुत्तनमकका  
धुमकिमार्ज॥ नयमयाधिवलरुषिकस्तननेति॥ १ ॥ ॥ ३ ॥ मुंगनासवलपी

10

5

नकपारवकं नकाधनं हिमदुखानमिवाशुदत्तं॥ वक्रधनं शुद्धिधनं मधु॥  
नेचवाक्यं॥ नयमयाधिमृदुवर्धस्वनेनमामि॥ २ ॥ मालाधनंरुन  
कनलविहृषिनांगनशकयंरुविहृषिकबालचउ॥ ३ ॥ रुद्राजिनावलध  
नायकवर्धवर्ध॥ नयमयाधिमृदुगदुननमामि॥ ३ ॥ स्वलाकनाध  
मवलकिरुनामधायंरुक्षयविहृषिदुवचनसर्वनाजं॥ चिकामधीप्रवलकं  
दलपृष्ठगंधं॥ नयमयाधिमृदुसर्विकेनमामि॥ ४ ॥ स्वलाकनासिंश  
नरुषिकसर्वसत्त्वासंस्तानपंकमिनिनानवमग्नसत्त्वा२ मालाकिरुयधम

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35



नरु नवाधिमार्गे नयप्रयागिवलमार्गे ददं नमा ॥ ॐ ॥ गत्वा च ऊनन  
 नकेषु अविमने भीतीरुहदिविमाननहसामने ॥ ॐ ॥ जना नकी सकल  
 रविनामयं कि ॥ ॐ ॥ यमपाक्षिननकग्निसमं नमामि ॥ ॐ ॥ संज्ञासयं कि  
 रुमपाकनरुग्नरुमीरुधर्मनाजमिव आगंक कर्मनपि ॥ ॐ ॥ कर्मरुमीमिव ॥ ॐ ॥  
 धीतिरुनमि ॥ ॐ ॥ यमपाानीरुसासकनं नमामि ॥ ॐ ॥ गत्वा च ऊनन  
 नयमनाहनाय दुलोकनाथ अरुयंकनसर्वसत्त्वा ॥ ॐ ॥ इषानवे नशस्मनामि वि  
 मकिरुधरं ॥ ॐ ॥ यमपागिहककिरुधिनं नमामि ॥ ॐ ॥ त्वं दुलोकगमि

ककनवावसनं युचिमखंडनपर्वरुजिर्हमाने ॥ ॐ ॥ इरुवयि कि नसत्त्वा  
 नरुखादुजानां ॥ ॐ ॥ यमपागिहकनासकनं नमामि ॥ ॐ ॥ अन्यानरुजुधः  
 पिंदिरुयुनसत्त्वा संपियकननहधवनदिहि ॥ ॐ ॥ यमपागिहकनरुवि  
 षादुजानां ॥ ॐ ॥ यमपागिहकनरुविदुषानमामि ॥ ॐ ॥ गत्वा च ऊननवकि  
 रुवंचभुर्य विनामहीदुलिननलपुलावरास्य ॥ ॐ ॥ ककननाजसगरोननः  
 ननमस ॥ ॐ ॥ यमपागिहकनरुहकनं नमामि ॥ ॐ ॥ गत्वा च ऊननवलिरु  
 गनमनाचथस ॥ ॐ ॥ इदियरुलमनरुनपि सुपाद ॥ ॐ ॥ धर्मकश्चनपनि नमि



गदानवदं॥ नयप्रयागिवनयमददंनमामि॥ १२॥ गत्वाचऊनदिविक्  
 दुलदवयुं॥ दानसहिनरुधपिंदिरुइखेक॥ १३॥ नयप्रयागिपनिपुर्लसम  
 दिनलं॥ नयप्रयागिधनहधिकनंनमामि॥ १४॥ नंकासनयमयदंसिहनाऊ  
 सिहिकामवस्यनचनिकंनवनाऊसिहि॥ धारस्यचिकपनिवर्जिकधर्मचिक॥ ४३॥  
 नयप्रयागिवरुनपधनंनमामि॥ १५॥ विस्मैरुमिकिमिकानिसमहव  
 किगत्वाचऊनमलिनयमनस्मनंनिक॥ निभानिकघनयनायददंनिकधर्म  
 नयप्रयागिवरुगधनंनमामि॥ १६॥ इहिकमार्गदपिसाचरुवपपक्षी

कुतुबुइभवरुयपिंदिरुसर्वसत्त्वां॥ न्यादिदृष्टिवरुधिसमधिनलं॥  
 नयप्रयागिवनकाननिकंनमामि॥ १७॥ वानाहअस्वकनयमहाऊव  
 नउठंगऊनवनिऊंरुयनाऊसिहि॥ न्याहपुनयप्रनवगमहासमडं॥ नय  
 प्रयागिदिकमश्रुयंनमामि॥ १८॥ नैआहुकंरुजस्मनामिविमकिइइ  
 खे॥ नानासमाधिपनिपुर्लविविकमनं॥ नंलामकूपनिवसनिअनकसत्त्वा  
 नयप्रयागिऊयनासकनंनमामि॥ १९॥ नानारुयंरुजस्मनानिवि  
 मकिइउव॥ नाऊस्यदधुरुयनाऊस॥ नोनरुहै॥ नयप्रिभगुहककंदलवा



निदर्शय ॥ तं यन्मया भिन्नं रुच्यं च ददं नमामि ॥ ६२ ॥ व्याधिहृयं सगपि सा  
 वसजं किनीनां आयुः कृत्वा धिहृयं कृष्टं विजागृह्यं ॥ ६३ ॥ वेनागकं सवद्रुपापः  
 विनासयेति ॥ तं यन्मया भिन्नं रुच्यं च ददं नमामि ॥ ६४ ॥ गुहास्तुर्मिनेन म  
 धर्मभूयसां संकुमुकं भूमिजिह्वं विजियवं कुरुय ॥ ६५ ॥ सर्वप्रधानं विनस्य ॥ ६६ ॥  
 जवस्य वषापं ॥ तं यन्मया भिन्नं रुच्यं च ददं नमामि ॥ ६७ ॥ निश्चयस्य नगने  
 संसृष्टिधातुल्यं ॥ नानादूर्मिनि कलकचं पकपालिजातं ॥ ६८ ॥ नस्मात्तदागमिज्जु  
 पदसंविनानि ॥ तं यन्मया भिन्नं रुच्यं च ददं नमामि ॥ ६९ ॥ दर्वकं वनवननं

रुमवन्दिहस्य गभर्षय रुमन्ति सनवन्दिहस्य ॥ यजुषनागमनस्य वन  
 नस्कनामि ॥ रुमविभगनरुचननमास्कनामि ॥ ७० ॥ रुमर्थे नि  
 कनशास्तुर्वनिधकानं ॥ मर्कितपुष्टि ॥ धनवृद्धिस्तु नृधकामा ॥ जायवि  
 रुमिवरुपुष्टि विभनरुगियनया निकानमपि रुमस्य ॥ लोकनाथ ॥ ७१ ॥  
 संकिर्दियं किर्माविर्यमरुनरुवावं नाहोदिवावमनाममनस्मनकि ॥ ७२ ॥  
 इत्यप्रविष्टुहृयपापविनासयेति ॥ रुमकिदवसुगं रुवनजयनि ॥ ७३ ॥  
 ॥ ७४ ॥ ॥ रुमि श्री ३ ॥ जायवल्किगभनस्य कनशास्तु अस्तु रुमनाथ ॥

25

15

10

5



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ वक्रादिदं मन्त्रं गुणनयजिनांग-हानाधि-  
पंगुनमयंगुधादिर्यवक्तुं वागीश्वरं गुणगन्सकनं नमामि ॥ १ ॥ अथादि-  
भीरुनवनमिव नमस्तुतिरुत्सवेकथादिविनम्य वसुगीदसदं ॥ जंकिजयंति  
रुवन-नववागीवीरु ॥ वागीश्वरं ॥ २ ॥ स्तनपदानसनिन-नमविं ॥ ४ ॥  
गंधवि-वायसविं विविविधभुवहृदिदं ॥ स्तनग्वनंतिरुवन गवनाज  
नत्तं ॥ वागीश्वरं ॥ ३ ॥ नत्तदिसिपनिकन ४ पनीपत्तं ॥ रुयं चिन्तविं  
रुगंधीरुनमाननीयं ॥ सर्वरु कालकथनाहिदिदं मन्त्रं ॥ वागीश्वरं ॥ ४ ॥

वर्थाविधि न विपरीतिस्तुल्यविर्यवृद्धिः ॥ आनाधिपं विविविधैर्गुणैर्न जनीयं ॥ वि  
 षायादि स रूपा न रूपा न न युक्तं ॥ वागीश्वरं ॥ ॐ ॥ वागिनियमिदुक्तं वरुचयवा  
 मवायं पूष्टिरूपा म न भित्तं स रूपा न ॥ दुष्टं न मानमनमाचन नदिहिरू  
 वागीश्वरं ॥ ॐ ॥ ॐ वि श्री वागीश्वर वन्दनाम्नां संस्मारा ॥ ॐ नमो  
 वृद्धाय ॥ नकाशं नमिदं वै व न न्यानां विनूयम ॥ न संसा ने न निर्वानां ॥ न कानेन  
 नमुवेद्य ॥ १ ॥ ॥ भारुधै स क नानि शं माऊ सोऊ पुदायकं माहन सर्वमा  
 नाशं ॥ माकान न नमुवेद्य ॥ २ ॥ ॥ वृक्षाना मदि कं धाने वृक्षानां जनमनक



25

15

सिद्धिनिधि

वरुनिर्गुणं वद ॥ वरुना नं न न स वे ॥ ३ ॥ धार्यरुवाधिसंरुधधर्मधरु  
 गरिसदा ॥ धर्मानां पनमाधर्मधरुका नं न न स वे ॥ ४ ॥ यथानास्तिरुथना  
 स्ति ॥ यथानास्तिरुथनास्ति ॥ यथावादिरुथकादि ॥ यकाननसवे ॥ ५ ॥  
 पक्षकनमिदं यथयपिंययायनासन ॥ रुथथं रुदिवा नाथो रुजाननियनम ॥ ६ ॥  
 गरि ॥ ७ ॥ वरुनिधीपंयकनगीरुजगुसमाफ ॥ ८ ॥ नमावजाय  
 ॥ सिद्धिनिधिवनयादपंय ॥ श्रीधर्मधरुविचिउकं ॥ धार्यरुसुखमहासुखसुयं  
 रुवैथनमामिहं ॥ ९ ॥ धर्मधरुध्यानसंरुकरुडिलिरुडुवविनासनं ॥

10

5

धर्मधरुनिर्गुणरुगुरुसुयं रुवेथयकासिनी ॥ १ ॥ उलियरुगंरुदुलि  
 यनामपुमगिनिरुवसुविहं ॥ वरुकरुडकगुसिहगिनिगुवयदुगिनिगुव  
 ॥ ३ ॥ विपुनविस्तिनमहायसुनविमलनीलसुनरुगिहं ॥ ननिनिरुधु  
 लधुगधकललदिव्यकुसुमसुसाहिहं ॥ ४ ॥ सकलयुमासनसुधदलं  
 नत्तमयडिनिगिहं ॥ रुनिंयकगुनिविचिउनामसुयं रुवेथयनिगामिहं  
 ॥ ५ ॥ धवनवपुयनरुनपुमासनविस्तानलावनसुनरुन ॥ वरुनमन  
 किनीलपीरुनकापुललसुगानिहं ॥ ६ ॥ नानाकसुमधरुसुहिरुगुनि

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35



तवर्षभुसाहिकं॥ वरुचंयकनागकाननयजमानमनाहने॥ १६ ॥ नाग  
 गभर्वजजकिंननगनउमनिहिकुनिवासिकं॥ यध्वरुमाशुवांदिह  
 विविधियहानधुसिकं॥ १७ ॥ धर्ममेशीरुत्तस्यविकमंरुदवकस्माग  
 नं॥ दायसाऊनवुडनार्थधर्मधाउवागीश्वन॥ १८ ॥ भानिकानधः ॥ १९ ॥  
 साधनार्थपञ्चपनिनिवासिकं॥ मारामालिनीअनादृष्टिइहिकथानप्रसो  
 रिकं॥ २० ॥ अष्टनामानिवेकनागरुमधिलिंगगाकर्ककं॥ वाचगिनि  
 वनकुरुकिथरुनिनगभर्वकिविकुम॥ २१ ॥ पूर्वदिगदिगदवकिथरुलहा

लसमूहव॥ वागमकिविचिकनार्थविंतामक्षिनीदरुधिकां॥ २२ ॥ कग  
 समभुनिवगजपवाहकगावकिनीदिसंगमं॥ २३ ॥ कुरुलदंअसंखदाका  
 वनामयकिहिकं॥ २४ ॥ अकुलवलपदपूरुवागीश्वनगुफगोलनिज  
 दनं॥ रुकिननजनअरिष्टरुलदंमाऊभुखावकिषाप्रयाह॥ २५ ॥  
 मिथीवडगीभुहुंसमाफ॥ २६ ॥ अंनम४लाकनांथाय॥ २७ ॥ कामनियव  
 गपिकभुवर्कजजकिंनननागमनजव॥ इइमदिहदनमागननदिविचि  
 नानायनदवनमाम्मु॥ २८ ॥ वामलउऊवमागनजजनेदिकपिकमुजा

कामनोपर्वप  
 ३६

25

15

10

5



शिव

यकमानं॥ १ ॥ अथ समधुन भुव्य भुव्यं विधिना॥ २ ॥ अथ सागन समद  
ननं दी लाक वामन दिन वन वन॥ ३ ॥ अथ मयकन मयमकि॥ विधि॥ ३ ॥  
खर भुवर्धकन मयता अथ नागवर्म भुनरुक्तं॥ वाभुकिपमनाग  
भुमक दं विधि॥ ४ ॥ अथ नक नाग सव भुनाग लाव नागपम द्रुतु॥ ४ ॥  
नाग॥ ५ ॥ अथ नागन वामकमलं विधि॥ ६ ॥ अथ भुवर्धन विधि॥ ७ ॥  
यः श्रीनिम्ब नागन वदि विस्तरं॥ मद्रुदकपनम घट्टुदग विधि॥ ८ ॥  
६ ॥ अथ श्रीज्या वला केर धनस्य अथ नक नागना नागवलायं समाप॥ ९ ॥

ॐ नमो वहाय॥ १ ॥ अथ मद्रुदकपनम घट्टुदग विधि॥ २ ॥ अथ भुवर्धन विधि॥ ३ ॥  
सकादिदवपुनमामि॥ धर्म धातु निनालयं॥ ४ ॥ नमामि वृद्धं लोकनाथं  
सकल जगत्पुनः॥ सामकिलोचनिपत्रनिता नायक निन भुवर्धन॥ ५ ॥  
वृद्ध सवलन वलनिनः॥ पथकायगुनादधि॥ लोहमाह विषय काम सर्वदाः  
दिन वाक् सति॥ ६ ॥ अथ पूर्वमध श्रीहस्ति वाहन वृद्ध नीलवर्ध दहा॥ अ  
नगदवगाध माला निरिक्त वजासन श्रीमद्रुदक॥ ७ ॥ ददिनमख श्रीभुनेगः  
वाहन उदित भुवर्ध दहा॥ विविधिन त्रसपन्न दायक नमामि श्रीनलसम्ब

श्रीनिम्ब नागन वदि विस्तरं



25

15

10

5

॥ ॐ ॥ पश्चिम मख श्रीमय नवाहान यम नागजी देह हाशं ॥ श्रीमिनाम वक  
 नमः सर्वलोकपुत्रिणाभिना ॥ ३ ॥ उरुनमः श्रीगन उवाहान हीनव  
 र्हस्य हाशं ॥ वफरु निस्वहा श्रीममायसिद्धि ॥ गनविद्यादायकं ॥ १ ॥ धर्म  
 अकुमधुलमाम रुगिकवर्हस्य हाशं ॥ सिंहवाहन ध्यानमनः ॥ इलाकनाथ श्री  
 वलोचन ॥ ८ ॥ वेदवृद्धमननियं ॥ जगत्पद्मनाभिक ॥ गगनपानिनिक  
 नमः सर्वद्वगतिनामने ॥ ९ ॥ धर्मदानवज्रवल्किनी ॥ रुयभुनजिदि  
 पसंभने ॥ पापनासयवृद्धमनः ॥ मृकियनदनदहिम ॥ १० ॥ नमः सुगंध

॥ ४ ॥

वैराग्यपन धर्मेभाउनलवैराग्यभावादन ॥ अलछाहिंमनः संपर्हनेनववृद्धः  
 आन ॥ ११ ॥ विविधिनववज्रलयन भुवर्हस्य मखद्वृद्धसंपर्हने ॥ अलकानिपा  
 पहनन ॥ अलकवृद्धमनः ॥ १२ ॥ वेदमनिनिनुनपालवृद्धला ॥ रागुधक  
 कसकमि ॥ वैराग्यपन अलसंपर्हने ॥ आयमा नागधसंपर्हने ॥ १३ ॥ वैराग्य  
 वृद्धनासुगंधाहुंममाय ॥ १४ ॥ ॐ नमो वृद्धाय ॥ दानिदयं नमः संपर्हने  
 मानाऊ मखद्वि ॥ यकिस्वामनः ॥ अहिमाहकधगक ॥ १ ॥ किमिना  
 मनीविद्याहीननाथदशवर्हदिहं ॥ वैभूवांथयनिशक ॥ अहि ॥ २ ॥ माहा

पश्चिम  
 मख  
 श्रीमय  
 नवाहान  
 यम  
 नागजी  
 देह  
 हाशं

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35



२५  
 १५  
 १०  
 ५  
 ०

यी। गारुगी। न्यादिपुरुषानां गुरुजनानां ॥ ॐ उज्जालं मया दृष्टम् ॥ शहि ॥ ३ ॥ ज ॥  
 मया यन्निजं नार्थं गुरुकर्म इह न ॥ ॐ काकि न पं ॥ शहि ॥ ४ ॥ कि ॥  
 कथं महाधानं न वपुः हनसागन ॥ ॐ इह नार्थं ॥ शहि ॥ ५ ॥ कि ॥  
 कासमान् शमाहासागनलधन ॥ ॐ इह नार्थं ॥ शहि ॥ ६ ॥ धर्माधर्म ॥ ॐ ॥  
 न विज्ञातं गम्यागम्य न विदितं ॥ ॐ नार्थं ॥ शहि ॥ ७ ॥ साह्यासा  
 दि कं पं ॥ न वपुः मदानं ॥ ॐ नार्थं ॥ शहि ॥ ८ ॥ हनमया उपे  
 ह ॥ ॐ शिवा विनासितं ॥ ॐ हनमया सहाहिंसा ॥ शहि ॥ ९ ॥ ॐ हलाक

२५  
 १५  
 १०  
 ५  
 ०

१०  
 ५  
 ०

० CMTS. 5 10 15 20 25 30 35

रविनं पनलाकनवदिनं ॥ ॐ वदिकं कर्म स उद्य ॥ शहि ॥ १० ॥ कासिपुष्य  
 भासासि उमनवाय ताह नं ॥ ॐ हसं विविनं मफु ॥ शहि ॥ ११ ॥ कुरुविकेथ  
 काहना वरुविकुसमाकुला ॥ ॐ यस्तु नं नारुपस्यापि ॥ शहि ॥ १२ ॥ जनापना  
 पसं वाहना कारुमगमया ॥ ॐ नाजानमा उद्यमन ॥ शहि ॥ १३ ॥ ननकापु  
 मानसः कश्चिजाना न विद्यन ॥ ॐ महामिकस्य सनदी ॥ शहि ॥ १४ ॥ वेद्यानं विद्य  
 नारुत्वं त्वयाधिकि विस्मि ॥ ॐ लाकनाथ रुद्राणां न लाकसव नाचने ॥ ॐ ॥  
 ॐ ननकाधका उं समाफ ॥ ॐ ॥ ॐ नमो लाकनाथाय ॥ ॐ नाधिकपिह



॥ जगत्पुनरुदयसंघे गन्धनवज्जमनिदानववन्दिताय ॥ १ ॥ इति सप्तदिवसकथन  
 विनाय निरुतमाभिगिलसाकनूत्तमाय ॥ २ ॥ वा नाकेकाटिसमककनवः  
 नायः कालालिकसगमस्यवनधनिताय ॥ ३ ॥ मुद्राजमालालिककाजगन्धनाय नि  
 र्ण ॥ ४ ॥ जंलाजपातिकमलासनसंस्त्रिगायक रूपविकरुनीनाजसुवन्दिताय ॥ ५ ॥  
 ॥ नत्वादिहानकनिकांजालरुषिताय ॥ निरु ॥ ६ ॥ अत्पादरुंगरुवसागनना  
 नत्तायः इर्गहर्गहर्गहर्गवयनिमावनाय ॥ ७ ॥ नागदिदाघयनिमूकसनिर्मला  
 य ॥ निरु ॥ ८ ॥ मेत्पादिहिनहनवक्रविहानताय ॥ ९ ॥ नाम्नासकलसत्त्वगुधा

॥ वनाय ॥ १ ॥ माहाधकनरुगइष्टविदानताय ॥ निरु ॥ २ ॥ देवदवग  
 वनिगानधमाकदाय ॥ सत्तायकनगानिरुहकनिधनाय ॥ ३ ॥ सर्वरुसनप  
 नियनिरुदगनाय ॥ निरु ॥ ४ ॥ मूलावत्तननकमार्गविताधनाय ॥  
 सनगधकिनापनिधिसनाय ॥ ५ ॥ स्तनेकादिष्टिगबलकिरुमाकदाय नि  
 र्ण ॥ ६ ॥ ॥ तंलाकनाधरुवनस्वनमपदाय ॥ इति इष्टरुपयंजलदान  
 ताय ॥ ७ ॥ लत्तादयंकजगुपुकिवन्दिताय ॥ निरु ॥ ८ ॥ मरुदमंदन  
 रविगुथगत्तहाव ॥ स्वादिहिसरुदंविमलेपुतावं ॥ ९ ॥ चिन्तामतिगवसाधिता



वेवकिर्हृत्माहं निःशुं ॥ ६० ॥ गरीकिर्मादसनयागलिभोरुमार्ग अष्टागलिपु  
नमिर्नवयादरुमा ॥ ६१ ॥ श्रवणवर्चकिर्मासमालयकिर्निःशुं ॥ ६२ ॥ संका  
श्रुतगुरुमाधवपुत्राय ऊ ॥ श्रीवृद्धमखनकिर्मासहस्रानवानि ॥ ६३ ॥ कानाहृजंग  
सहिरवडुल्लिकभामि ॥ निःशुं ॥ ६४ ॥ कृत्यर्थमहायस्थपयिज्याय नात्तनं  
सर्वकामप्रमर्शवर्गगुह्यकिर्मासखावकिर्मा ॥ ६५ ॥ इन्द्रकिर्मा आर्यावलाकिर्मा  
ग्वनस्थवन्दनात्तजिह्वा ॥ ६६ ॥ समाफ ॥ ॥ ॐ नमावृद्धाय सा नदा य ॥ संघे  
इन्द्रकिर्मा तं निरुजान्दहाहं स्पष्टिकाकमलयइगुन्नाचनीया ॥ दिव्यावनावन

नरुषिगभोपनूयाः श्रीस्तानदरुगवमिसकदंनमामि॥ १ ॥ संस्तानसागनमजद  
दिमग्नसत्वाः संस्ताननीस्तननजाविरुपादयया॥ हालंधहालमक्षिकुधुलपुष्ट  
गंध॥ श्रीस्तानदा॥ २ ॥ जालानकिरिकाधिकाः कननीचलाकमाहंधकानकन  
रुग्नरुग्नानां॥ संस्तान्दिकामनिरुनसममस्तदाधे॥ श्रीस्तानदा॥ ३ ॥ विना  
नूरादननकाधुकिरुदिकालिः संस्तानिनिकनकयस्तकमानिनिच॥ नद्यागुनि  
गुननिजकिनरुस्तपया॥ श्रीस्तानदा॥ ४ ॥ पास्त्यारुग्नकिरुमिसिनस्त  
दाधे॥ दिवांगनमनसिस्तंयनिमादिनियाः कयादिकारुनरुगुनवस्तमाच॥



श्रीमानदा ॥ ॐ ॥ विद्यारुवजगति ज्ञाननिष्पत्तिः कृत्या नदा रुगवति किन  
 यत्र सोम्य ॥ सोदयं नृप गुनविस्तारगुरुगि ॥ श्रीमानदा ॥ ३ ॥ पूजापराजि  
 विधेयनिष्पत्तिः नोपादि व्यागनाहृदिमनाहृत्स्वस्य यमा ॥ जोषद्विनाहृवति किन  
 यदहं कि ॥ श्रीमानदा ॥ ४ ॥ जस्य प्रसादमवगच्छस्य सदा पुस्तन ॥ लोका नाथ इति ना  
 कस्य प्रसादा ॥ धर्माथ कामरुलदं किन भाकरावा ॥ श्रीमानदा ॥ ५ ॥ ॥ श्रीमानदा ॥  
 श्रीमानदासु ॥ ज्ञानं समा ॥ ॥ ॐ नमो भगवते ॥ उदिमं रुषी वाधिमहि ॥ य  
 र्वपुष्टादिपुनर्वं ॥ सत्त्वसहगुणादि ॥ यद्विज्ञानपुं कं पि ॥ ६ ॥ श्रीमानदा

सिंहप्रसादनाथं पंथकायगुणादधि ॥ दानमीलाकमहापुद्गलविर्यध्यान  
 समागमं ॥ १ ॥ ॥ लोकाभाहृदिवयकामनागदविनासने ॥ एषप्रसावनन  
 वर्जितं सर्वसत्त्वहिनकनं ॥ २ ॥ ॥ दवमानवजगद्विद्वद्गुरुकिन्नमहान  
 गे ॥ ॥ दवमानवजगद्विद्वद्गुरुकिन्नमहान ॥ ३ ॥ ॥ दवमानवजगद्विद्वद्गुरुकिन्नमहान  
 लघायेत्सत्त्वहिनसत्त्वविकं ॥ गन्धर्वानवजगत्सत्त्ववात्सकि ॥ रुमिसिलधन  
 वन्दितं ॥ ४ ॥ ॥ दवमानवजगद्विद्वद्गुरुकिन्नमहान ॥ ५ ॥ ॥ दवमानवजगद्विद्वद्गुरुकिन्नमहान  
 वाद्विद्वद्गुरुकिन्नमहान ॥ ६ ॥ ॥ दवमानवजगद्विद्वद्गुरुकिन्नमहान ॥ ७ ॥ ॥ दवमानवजगद्विद्वद्गुरुकिन्नमहान



विरुवलं नल कथुलमकटकश्चिरु नकुरुयादुमुसाहिकं ॥ १ ॥ वडुनीवे  
 मरिदवहवनमनकाटिसुजानिकं ॥ शयति मरिकादिपापं मालहंगवि  
 धंसने ॥ ६ ॥ मालजंगननपुंदरी कामधुविमाहिकं ॥ कष्टवजनिव  
 जनकलाविधनयकनयकं ॥ ७ ॥ कनक कनकविलापरुके महुवालज ॥ ८ ॥  
 जानिकं ॥ कनकवजनिवजनकलादि यनपस नयकं ॥ ९ ॥ दहिनिं मरि  
 श्रीवभुलयन वामसुकुपहानकं ॥ दहिनवामकसकचउनयकरुसरीन  
 कं ॥ १० ॥ यणधूपनवयदियं भुगभमालविलयनं ॥ दुरुधुयकापनाम

लवगयधसुसाहिकं ॥ ११ ॥ वडवडसुमलनिधं कायवाकपुवीव  
 ने ॥ जनसत्कारगर्गनिधं कायगानागधसंपुदं ॥ १२ ॥ ॐ नित्यीवदृष्टि  
 लाके समाफ ॥ ॥ ॐ नमावहाय ॥ धर्मधुग्वयंरुधीदगानावदि  
 ने ॥ नागयडुजर्मवरिनसत्त्ववदिनमाभुन ॥ १ ॥ नममुशंपकवडगु  
 नामयप्रकासिकं ॥ यककायसर्ववरिनयकवहनमाभुन ॥ २ ॥ वड  
 हादभहिनविष्टिससर्वसत्त्वडभानिका ॥ विष्टिकनसासर्वयायिनसर्वसि  
 छिनसमुन ॥ ३ ॥ ध्यानकायगानागधकायप्रकासिकं ॥ वडका

१ धर्म धुग्वयं  
 २ ॐ

25

15

10

5



यधर्मकायसंघकायनमास्तु ॥ ६ ॥ पञ्चमनक्तिर्यनिलं पीतनकमना  
 हना ॥ नकाधनसामसाहिरवत्तं पञ्चनमास्तु ॥ ७ ॥ चतुस्रधुलम  
 असेपी पञ्चनित्तुकासिने ॥ इदमहमिग्वननार्थपञ्चवदनमास्तु ॥ ८ ॥  
 इदमपुदिपानीरुवनमास्तु पदवनदायकं ॥ यनमामिधर्मनाजं पञ्चका ॥ ९ ॥  
 यनमास्तु ॥ १० ॥ वरविधिपुष्पाविष्टिनसर्वदवनपञ्चकं ॥ वरिपुष्टि  
 मास्तु पादं मास्तु पादनमास्तु ॥ ११ ॥ धर्मरुमीगिनिग्वसिंहवद्वथानम  
 नाहनं ॥ सर्वदवगभवसिंहसर्वदवनमास्तु ॥ १२ ॥ सर्ववन्दिककायकि

नरागावरिपुष्पाहलं ॥ इनीरुधवपापनासंख्यं निवद्रूपनाकिने ॥  
 ॥ १३ ॥ गिरुवरिपुष्पाकिनीसमहा नद्रूपकाहलं ॥ कर्मवधनगुहव  
 धनीवप्रगुगिनिविनासिने ॥ १४ ॥ वरिपुष्पाहलीसुहं समाफ ॥ ॥  
 ॥ नमालाकनाथया ॥ रुवननयवन्दिकलाकगुन ॥ ममलाधिपकिमुकिने  
 कावनं मनीनाकवनं पुकिनिदिकनं ॥ पुमामिबलाकिनाथकनं ॥ १५ ॥  
 सुगतात्मनयपुनयधनं वरुनजनरुषिकदहधनं ॥ ममकाहवकथाग  
 कमोनिधनं कनकावनरुषिकवानकनं ॥ १६ ॥ कुरिनासुपिंगनधूमज

रुवननयप  
 ॥

25

15

10

5



नं. भविष्यं विष्णुमहलपर्वमपं. कमलायकलाचनवान्वने हिमखलु  
 वियमुलगधुहग. ३ ॥ मधनेतिरुपेकजनारित्तमे. लनदस्वरुगजिंम  
 घनकं. वहनल्लविहृषिकवाहुरगं. नका मलसाकनपानि कने. ४ ॥ म  
 गवर्मेनिगस्त्रिकवानरुन. गुरुकधुलमधिरुलालधनं. विमलाक ॥ ५ ॥  
 मलादननारित्तमे मधिरुलमखनहमवने. ६ ॥ कटिवास्त्रिकवि  
 दधुवककधनं. कितलानमहादधियानगं. चरुपधमयादिकनकध  
 नं. कलवाधिरनं. वरुसकनं. ७ ॥ सुरगमनिकनं. दहवाकिकनं. स

वनं. वनं. मुनिदहधनं. विविधकूलनेति. कलधने. दगपानमिनाए  
 नमार्थकनं. ८ ॥ चरुवुं. विहानविधकधनं. कथमादयलानविला  
 लधने. मनिनोपनगस्त्रिकयादहगं. गजमकुविनस्त्रविहंसगति. ९ ॥  
 पानिपर्वमहामकनकधनं. कितलादकनानवनिगति. १० ॥ धाणकनका  
 हिनीवासगति कनसामयनिर्मलवानुहस. ११ ॥ वरुकिधीमदार्थ  
 वलाकिरुधनस्यरुकानकस्यचरुवगनारिहृनिरुवकाउंसमाय. १२ ॥  
 १३ ॥ नमास्वयं. वरुधर्मधुलनमध. कालिनीदसमहवसगधयं.

कालिनीदसमहवसगधयं  
 १३

25

15

10

5







25

15

10

5

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35

स्वनाशं च नमाननं पुमव्ययनिहृत्वा धिदृक्कनसिद्धा ॥ समन ॥ ६ ॥  
 उरुनमस्वकननयनं गनिनधानं इहिरिनादिनां ॥ विविधिमाननं अन  
 गरुयं हृत्कान्तिसफयनादिना ॥ समन ॥ ७ ॥ विविधिरुद्रुमनगरुगनाक  
 पथं कृगतिविनादिनां ॥ सनयनिरुमाऊदसिदमकिपदवनदायकं सम ॥ ८ ॥  
 न ॥ ९ ॥ वसवनिठुवननयालवदुला मार्गमिलमिदपऊरु ॥ दसिमि  
 तिधिकृत्वा जसेरुक्वददर्शनमर्कला ॥ समन ॥ १० ॥ श्रीवमाचार्यकृ  
 नां नचिरुनवभुक्तिमालिकां ॥ गीतयकनिरुसकं नस्मिहृत् ॥ विविधि

हकिप्रयुक्तिना ॥ समन ॥ ११ ॥ हकिधीनहावद्वयीरुक्तां समाप ॥ १२ ॥  
 ॐ नमो यकृत्वा यथा ॥ नविकृतां कुरु नवनूपधनी गुरुवर्मप्रकाशकनासक  
 नि ॥ उपमावनकायकानामूषी प्रथमामिभुक्तानियकृत्वा ॥ १३ ॥ अ  
 किभोदरुद्रगविरुक्कनी यदमयनिनादविपूक्तानि ॥ असिपर्ककाल  
 डिगुलधनि ॥ प्रथमामि ॥ १४ ॥ गुनसनमनकुरुपाइमकी विलसुपा  
 मसनपुवाधीकनी ॥ नमविपुहिसनरुक्तानकनी प्रनमामि ॥ १५ ॥ सन  
 नागरवत्सलजयकनि ॥ नमविपुहिसनरुक्तानकनी प्रनमामि ॥ पनयान

नविकृतां

ॐ



नरुषनरुषकनी ॥ अदिधानसुधानरुषानकनी ॥ अथमामि ॥ ६ ॥ वलधर्म  
 अनरुषवृक्षकनी ॥ अयनरुषगुनाधधियुक्तिकनि ॥ अथधर्मउपायविश्वध  
 कनी ॥ अथमा ॥ ७ ॥ सुगतात्मरुषंगयुसन्नकनी ॥ रुववधनइश्वविनास  
 कनि ॥ अथरुमीउपायविश्वधकनी ॥ अथमामि ॥ ८ ॥ अदिधानमहावल ॥ ९ ॥  
 वसुधनी ॥ गगनीयुमसंदस्वरुवकनी ॥ अथुवुंअविहानसमाधिकनी ॥ अथमा  
 ॥ १० ॥ अथरुगगनरुषमवलकलधनी ॥ दनाकनागनीवाधिगनलकिनिमि  
 नी ॥ अथवकिवाधिगसलरुषनी ॥ अथविपुनासनी ॥ अथमथनी ॥ अथसुसंजा

सनी ॥ अथीउककनिनमामिसिलसनिशंमयासाधनी ॥ ११ ॥ अथिथीउक  
 अथरुकानिका नामासाधुं समाफध ॥ १२ ॥ अथनमाउगुनाजाथे ॥ अथगगननी  
 अथिमाका ॥ अथिसेहानकनिनी ॥ अथरुथलनरुषयुकासिरुसुलसुमननन  
 पिनि ॥ १३ ॥ अथरुगगिनीनमामुनथीउककनिनमामुनरु ॥ नीलसार्दानमामु  
 नथीउगुनानामामुन ॥ १४ ॥ अथरुलालिरुवउमधुलनकवरुमथ  
 सिरु ॥ अथरुहेनवगनयागिनी ॥ लोकपालगमसंहिके ॥ १५ ॥ अथनूपमनूपदे  
 वीकहिंकपालधनिथी ॥ अथरुहनिमसिकयूनदकिमनकधनरुषिनी ॥ १६ ॥

अथगगननीय  
 १६

25

15

10

5



बाहुसिंहहृदयमानककिनीगमसहिमं॥ नीलउरुलखरुंधानिनीदवी  
 छिभुनदमनवाजनी॥ ४ ॥ मसुहेनवजगिनीसहिमबुंकापीथनीवासि  
 नीरं॥ वक्रहनिहनवुंमनिजनऊककिंचनसहिमं॥ ५ ॥ नानावर्कनू  
 पधनीदवीहसिचर्मयनिहनं॥ हानसांकिमंडमालानलमालामनिरुषी॥ ६ ॥  
 नी॥ ७ ॥ अचिन्तवनीअवधिआधिककहिंरुथनीवासिमं॥ सकलसं  
 सानननधीमाकाऊगनसीतालउधनधी॥ ८ ॥ कंकुमचरनभुगंधपूषा  
 धपनेवेयजाननि॥ अयनातमखुवजय॥ दुरुचामलसहिम॥ ९ ॥

वज्रगिनिनमानुनधीउकजनिनमानुन॥ नीलसार्दनमानुनधीउगु  
 नानानमानुन॥ १० ॥ अरुणिगोवजगिनीसगसाउंसमाफ॥ ११ ॥  
 ॥ अंनमानुन॥ अनिधनीनमइकुंचिकगासूर्यभुनिर्मलनाहिननाथो  
 परकुंडगमइकापठनासा॥ नगिआलंदनमाननसिंह॥ १२ ॥ अर्जनवर्धस  
 निलभुकेगाकांचनपर्वकसुधीननाथो॥ वर्षधियाभुलभुवभुकर्क॥ अम  
 हिउंहपिकाननसिंह॥ १३ ॥ आपरुयंकसंसिचिनासा॥ यमप्राप्तकि  
 नीलगुनशा॥ १४ ॥ अर्धनमहिनीलसिंह॥ अमहिउं॥ १५ ॥ तनीध

॥ अंनमानुन॥

॥ अंनमानुन॥

25

15

10

5



सगं हि नमः स्यात्तं हिं गुलि वर्ध स न क स गिकां विं भक्ति विं भक्ति स्थ  
 शुद ना ॥ असहि ॥ ४ ॥ वरुं शु वरुं शु सं वि रु गी वा सिंह न मृ ग ना रु स  
 नी नां ॥ को व न स्व रु वि उ रु म व र्ध ॥ असहि ॥ ५ ॥ ग द्द कि नी न प  
 र्था स वि चिं का माल ग ना य नि य स्ति रु न पां ॥ अ व क म ध ग ना सु मि नि ॥ ६ ॥  
 दा ॥ असहि ॥ ७ ॥ व क म लं रु न क स पा री न रु न मं दि रु अ य रु  
 यानी ॥ व म ल व क वि रु धि रु पा री ॥ असहि ॥ ८ ॥ ग क क मा न व  
 न मि क मा ना न रु म धि रु य स नी नां ॥ लो क वि ना य ग ना न न वी ना ॥ ९ ॥

हिं ॥ १ ॥ न म न न वा म न च उ ग धा माल प ना रु य रि पा स नि नां ॥ स  
 र्गु ल्म क न लो क वि रु धा च रु वि गे रु म धा म नी पा री ॥ असहि ॥ २ ॥  
 व रु धि गी म क म नि रु क्ता न क स रु सा ध ना रु उ स ना पा ॥ ३ ॥ न मा  
 धी स्व यं रु व र्ध ध र्मा ध रु य न म ॥ रु व रु ल नि धि मा म्य म नि ना न द र्श स्ति रु  
 ॥ स रु ध द ल न त स ना रु क नी काल स सा हि रुं ॥ ४ ॥ न मा मि धी ग व र्ध रु  
 ॥ वि रु ग रु दि रु य नं ॥ रु ग रु क पि रु रु ग रु ना धं रु ग रु पा दी रु वी ध र्द ॥ ५ ॥  
 व रु क स ना स र्ध स म रु व न सं स्ति रुं ॥ दि र्ग रु मि क न ल य र्ध आ रि न प य

नमो भगवते  
 नमो भगवते

25

15

10

5



कासिकं॥ ३ ॥ पञ्चदिनपञ्चमपञ्चवर्गसन्निर्मला॥ १ ॥ एवमनीलहमन  
 कस्यमयकनमासु॥ २ ॥ सुनाथुनननविर्गकुवदिकीवनक्षमले  
 २ ॥ कलमलइवइलिकसर्वपापविनाशनं॥ ३ ॥ मरुथुनिजिनम  
 लसर्वगुणविधिरुके॥ ४ ॥ कथागरनागवासं॥ ५ ॥ इतिरुवस्वपिता॥ ६ ॥ ॥ ३ ॥  
 कलपयकमलउत्पन्नकमलककालसंज्ञानिर्ग॥ ७ ॥ कलपयदियकंदल  
 नानाकलुमसाहिकं॥ ८ ॥ ॥ श्रीनयपालिनिर्मलकलपुत्रिस्थिरथान॥  
 मृगदवालयरुमीप्रसिद्धी॥ ९ ॥ कानिपनीवासिका॥ १० ॥ नानादृशगर्भक

धि कमलवंपकसाहिकं॥ ११ ॥ पालिजाककंदधवलनागवासनसंरुक  
 ॥ १२ ॥ मृदुभादुमृदुगिनीमृदुतेनवपदजिन॥ १३ ॥ मृगदवगधलो  
 कपालं॥ १४ ॥ कदयालगभसाहिकं॥ १५ ॥ ॥ सुवर्णमिधमदियां सुमन्त्रमस्थ  
 नीनंजन॥ १६ ॥ श्रीगुणधनीजिनकान्तदायनिर्गमिनिर्मयं॥ १७ ॥ गिन  
 संध्यास्यांसिलस्यसिद्धस्थानमनाहवं॥ १८ ॥ मलादुर्दसिल्लाककनसमाधि श्री  
 ककंदुनने॥ १९ ॥ ॥ कथागरकलागुधिअधिरुनकवासिकं॥ २० ॥ गग  
 मकिमिथसमाहवनिर्मलकलपुत्रवासिकं॥ २१ ॥ ॥ कससस्यसाजंकिवे



अथ पत्र  
३६

शसिदिनसंस्थिरं॥ कुरुष्व गङ्गासंगम सर्वकिर्थादि संगमं॥ १६॥  
यनकिर्थावशंका कविधिसकृदं हलं॥ मनधर्मकाममाकुं व प्रापसुवा  
वदिप्राप्याह॥ १७॥ गुनविंदनद्वयकुला आवन कुरुय भूमि॥ कान  
वानकलाभवति॥ धर्मभादुयीसंपर्क॥ १८॥ ॥ किञ्चित्त्वयं दुर्वैधर्म  
भादुयीकशां संसमाप॥ ॥ नमो भक्तो अथ॥ अपयन कामनि  
श्रीनागसंरुवदति॥ नाहिरयानिहनसिक्वदने॥ १९॥ श्रीवर्गमभनज  
दिदिङ्नाथं॥ गङ्गाहयंकनकान्भीहृदया॥ २०॥ श्रीअमिताभवसिले

॥ ३३ ॥

अथ पत्र  
३७

गङ्गाधिया॥ मिदंगमरुतिगीरवंसभीरिक्तं॥ ३१॥ नविसिद्धिद्व  
प्रसादादिनय॥ वङ्गाहवकुमुहसिद्धिवजसत्त्व॥ ३२॥ ॥ किञ्चित्त्वयं  
नसां संसमाप॥ ॥ नमो भक्तो अथ॥ वामिकलावनिमनिम  
कृपवन्ति॥ विविधविधिगनविहृषिक्तं॥ ३३॥ ॥ नानहयंकन  
हनकननभन॥ ननमभुनाभुनसविहृवदने॥ ३४॥ ॥ किञ्चित्त्वयं  
किञ्चुहं नानभी॥ कनाहिरयादधिसागनविदिक्तं॥ ३५॥ ॥ नानहिरवर्ध  
भुनानिहदमवन॥ कमलनयनविकासिकनमरुवं॥ ३६॥ ॥ हयनागकुरु



25

15

10

5

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय  
ॐ

नवितिरुखर्गन॥ माधवसिंहविजोगसनं॥ ॐ ॥ ब्रह्मिणी  
मिकनासाडं समाफ॥ ॥ ॐ नमो लोकोनाथाय॥ अनन्यवन्नदहस  
नसिंहसंरुव॥ दहिनवनंरुनवासकमलधनं॥ १ ॥ श्रीवृगमधनम  
रुयप्रसादा॥ सत्त्वंधाननइर्नदिरुननं॥ २ ॥ स्वर्गगिहाननभाज ॥ ३ ॥  
प्रदाता॥ अमृताकृतिलेधननीर्मलवननं॥ ३ ॥ अमृताकृतिलेधननीर्मलवननं॥ ३ ॥  
रुयकन॥ लम्बन॥ श्रीगणेशाय नमः॥ ४ ॥ अहर्दुनपा  
लीकव॥ ५ ॥ नगविह॥ माधवसिंहगंगमशुक्रविधिं सनिनान॥ ६ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय  
ॐ

ब्रह्मिणी अनन्यवन्नदहस॥ ॥ ॐ नमो लोकोनाथाय॥ शुचम  
नमिअऊनामनिसंरुव॥ अनदिरुयप्रसादमधनं॥ १ ॥ अहर्दुनपा  
यऊयकानन॥ लम्बन॥ अलचंदुमकृतिलेधनं॥ २ ॥ अमृताकृतिलेधननीर्मलवननं॥ ३ ॥  
नयाप्रवर्मा॥ निवासनयवासकिनां॥ ३ ॥ अमृताकृतिलेधननीर्मलवननं॥ ३ ॥  
रुयिननं॥ उर्ध्वकंधुलअधिरुयहननं॥ ४ ॥ अहर्दुनपा  
अधिरु॥ नवनमाजादप्रतिमावनं॥ ५ ॥ अनन्यवन्नदहस॥ ६ ॥  
नननयनप्रकासि॥ ७ ॥ वनकावन॥ अहर्दुनपा॥ मागपदा



25

15

श्रीगणेशाय

ॐ

शिष्यपतिपनमभन॥ १ ॥ कनकशुवनकनकुशधनामकहवनक  
 यनासिकगुहं॥ २ ॥ इति श्रीशुभमनरिगजकाठसमाफ॥ ३ ॥ नमो  
 लोकनोथय॥ कोपाकनचलरुमिविजयनपालं॥ वरुलाददभननाम  
 कदा॥ ४ ॥ आलेन्द्रिशीवृगमललाकधने॥ गनवधेदकनपालधी  
 ननिदुदवं॥ ५ ॥ नथवकुंमयाजागमननलिकोपनि॥ पजिकेसन  
 कयाविकेलाकनोथं॥ ६ ॥ कनरुगकिजनमाजप्रदाता॥ यादपेकर्म  
 लानमामिसिलसा॥ आलादिगं॥ ७ ॥ इति श्रीशार्यावलिकिगधन

ॐ

10

5

श्रीगणेशाय

ॐ

स्ययथरुथागकसाठसमाफ॥ १ ॥ नमोवद्वाय॥ कालिहउत्पन्न  
 श्रीस्वयेकुवेषुजोकि॥ नपालमधुलरुकिगदं श्रीधर्मधाडवागीधने  
 ॥ २ ॥ वीनमहावीनआगंमहाश्रीवर्जधनिका॥ कननीउपकमनी  
 लदरी॥ पनिहककुर्यापिका॥ ३ ॥ श्रीधयेरुवेषधर्मधाडनपाल  
 मधुलयातिके॥ जगहसंज्ञानयापिकं श्रीधर्मधाडनमामु॥ ४ ॥ एव  
 दिगंस्थिरवजासनं श्रीजकाखनीलवर्ध॥ गजमासनरूपसमजाविशधिय  
 दिनमामु॥ ५ ॥ दकिनदिगंस्थिरकुनेगमासनधीनत्वसेरुवयापिका॥

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35



सर्वे नत्तसयन्नराणा पीतवर्धसः साहिका ॥ ॐ ॥ वा नृधदिगंस्त्रिभुवनं  
नरुवर्धसः साहिका ॥ ॐ ॥ आ नमः प्रमय नमात्तनसकं नव नदा यवं ॥ ॐ ॥ उ  
रु नदिगं धिरे गव उवाहनः स्यामवर्धसः पुनिर्मा ला ॥ सफरुधी स्वरा अलं हला स  
र्वे सिद्धि विद्यादायकं ॥ ॐ ॥ सिद्धि प्रभाय अरु यदलवल माऊ मार्ग स साहिका ॥ ॐ ॥ उ ॐ  
सर्वे लाजः सर्वे सिद्धि माऊ मरि सि प्रायदं ॥ ॐ ॥ भनम सुलं म अ संस्त्रि नरु अ  
निमरु मनि ॥ सिंह मात्तन वा अगम प्रा ॥ अरु वर्ध नमा मरु ॥ ॐ ॥ श्री धर्म  
धरु आ न संयुक्तः जगदृष्टव विना सने ॥ ऊन ऊन पूरु नां रु सर्वे हल पद पाप

दे॥ १६ ॥ पश्यन्ती साधनाथी शक्ति क नाचार्य अपि ना ॥ १७ ॥ पश्यन्ती साधनाथी  
सिद्धि शक्ति हनना मुक्त ॥ १८ ॥ जन्म जन्म जन्म गद ॥ १९ ॥ स्वयं सानिद  
इष्ट विना सने ॥ २० ॥ सर्व पाप हनने वक्तु भाऊ सुखा वरि प्राप्ता ॥ २१ ॥  
॥ २२ ॥ धर्म भाऊ रागि धन गीत समाप्त ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ वद वद  
सुगत मनि नमा धर्म आदि रम्य वन नार्थ ॥ २५ ॥ सत्व संसाल उधन दया का वद  
धर्म संपद जनमा मुक्त ॥ २६ ॥ वद वद लोचन विभव अपि ना महा वेलोचन दया  
नमा मुक्त ॥ २७ ॥ अदि मय ये स्वयं रम्य निधी वद धर्म ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥



आसनमर्द्धि ध्यानदिक्षिमनि ॥ जमिनाहवयप्रपाथी अहयवनराता ॥ वृद्ध  
 धर्म ॥ १ ॥ विपश्चिभीषीविलंरुवनमनि ककुंरुडकनकमनिडाका  
 स्पयथी ॥ आससिंहमनिडा ॥ वृद्धधर्म ॥ २ ॥ मरुथीरुनसत्त्वडधनन  
 मर्द्धिवाधिसत्त्वडजनभाम् ॥ वसुमधुलसत्त्वसुहृजं ॥ वृद्धधर्म ॥ ३ ॥ ॐ  
 काविहृनडमहधनदजा ॥ वृद्धधर्म ॥ ४ ॥ नगअसननमनिस  
 नन ॥ वृद्धधर्म ॥ ५ ॥ गंधर्वगमडवृद्धसननं नागद्वयभाहनासनभाह  
 दामिडइधरविनासनभाह ॥ वृद्धधर्म ॥ ६ ॥ ॐ किथीवृद्धधर्मसंयत्ता

॥ ॐ ॥

इंसमाफ ॥ ॥ गेनमावडाय ॥ दानवलसमंगकवृद्ध ॥ दानवलाधिगना  
 ननसिंह ॥ दानवलसवधुयनिसमदकानलीकेयवपुविभाके ॥ १ ॥ श्री  
 लवननसमगकवृद्ध ॥ भीनवलाधिगाननसिंह ॥ भीनवलसवधुयनिस  
 सह ॥ काननिकेसपलंपुविसाके ॥ २ ॥ ॐ किवननसमगकवृद्ध ॥ कां  
 निवलाधिगाननसिंह ॥ कानिकेसपलंपुयनिसह ॥ काननिकेसपलंपु  
 विसाके ॥ ३ ॥ विर्यवलनसमगकवृद्ध ॥ वीर्यवलधिगाननसिंह ॥  
 विर्यवलसवधुयनिसह ॥ काननिकेसपलंपुविसाके ॥ ४ ॥ ध्यानव

दानवलसम  
 ॐ

25

15

10

5











स्वाप्ति श्रीसर्वोपमाजोग्यत्वाद्योयवजगुरागरीष्टराजभाराममथ

॥ १० ॥



25

15

10

5

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35





DPN 6584

Title: बौद्ध स्तोत्र संग्रह BAUDDHA STOTRA SANGRAHA

Run. No. 7309

Cat. No.

Micro. No.

Subject तुतः Stotra Hymns Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt.-New. / Maith.-New. / New.-Nep. /

Size in cms. 10.8 x 2.4

Folios 69

Lines (in a page) 8

Compl. / Incompl.

Folio / missing

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor काजिरत्न राजाचार्य, भवाः बहाः ये (केल)

Date: NS / SS / VS / KS 1024

Ruler / place Mani Ratna Bajracharya  
Kwabahah, Yen

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Mani Ratna Kasah, Bhansah  
Chen (Kela)

Material: palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

C. शुभ संवत् १०२४ मृशुद्ध जेष्ठगा ६ स्वमवार खपुन्दु सिद्ध याता कुल १ शुभः ॥  
निमित्तं श्रोतवाहनयो वज्राचार्य काजिरत्न मंसाकार लामाजुयात चोमो विद्या ॥

P.T.O